सितम्बर, 1984
वर्ष 20 ❋ अंक 3 मूल्य 1.35

ज्ञानामृत

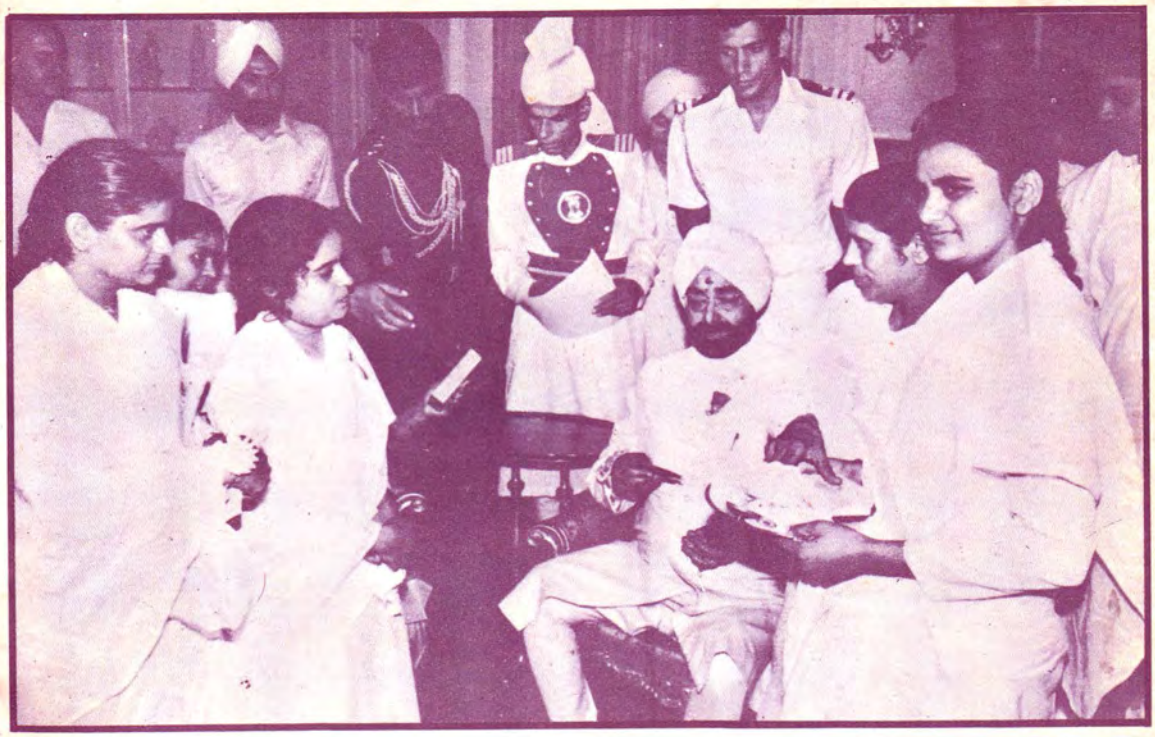

भारत के राष्ट्रपति माननीय ज्ञानी जैल सिंह जी को स्नेह और पवित्रता की सूचक राखी बांधने के पश्चात् ब्र.कु. बहनें उनके साथ दिखाई दे रही हैं ।

ब्र.कु. दादी निर्मल शान्ता सहायक प्रशासिका ब्र.कु.ई. विश्व विद्यालय, उड़ीसा के राज्यपाल को पावनता और स्नेह की सूचक राखी बांधते हुए ।

ब्र.कु. भ्राता ओम प्रकाश जी निदेशक इन्दौर क्षेत्र, ब्र. कु. दादी प्रकाशमणि जी को विदेश यात्रा पर प्रस्थान से पूर्व ज्योति देते हुए ।

नेपाल के प्रधान मंत्री भ्राता लोकेन्द्र बहादुर चन्द जी को राखी बांधने के बाद ब्र.कु. भाई-बहनें साथ में खड़े हैं ।

ब्र.कु. चक्रधारी जी, विदेश मन्त्रालय के राज्यमन्त्री भ्राता मिर्धा जी को राखी बांधते हुएउ तथा राखी का दिव्य सन्देश सुनाते हुए ।

माऊंट आबू में दादी प्रकाशमणि जी भ्राता रघुबीरसिंह जी महाराजकुमार सिरोही को राखी बांधते हुए ।

गुजरात के मुख्यमन्त्री भ्राता माधवसिंह सोलंकी राखी बंधवाने के पश्चात् ब्र.कु. सरला जी से ईश्वरीय प्रसाद ग्रहण करते हुए ।

भोपाल में माननीय राज्यपाल भ्राता के.एम. चांडी जी को ब्र.कु. अवधेश राखी बांधने के पश्चात् भोपाल राजयोग भवन के होवन हार उद्घाटन पर हार्दिक नियंत्रण देते हुए

सचित्र समाचार

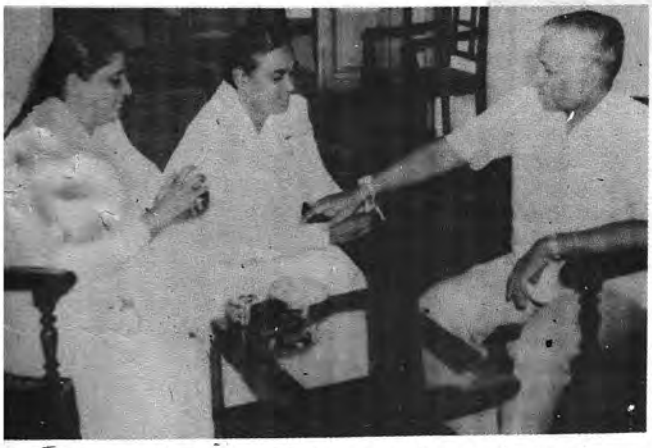

ब्र.कु. कमलेश उड़ीसा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश, भ्राता डी. पाथक को राखी बांधते हुए ।

शिमला में मुख्य न्यायाधीश, हिमाचल प्रदेश को ब्र.कु. राज स्नेह की सूचक राखी बांधते हुए ।

युवराज कर्णसिंह को रक्षा बन्धन का पावन सन्देश देते हुए राखी बाँध रही है - ब्र.कु. चक्रधारी जी, ब्र.कु. सुधा जी तिलक की तैयारी में ।

राखी बांधने के पश्चात ब्र.कु. बिन्दु जी भ्राता ज्योति वसु, मुख्य मंत्री पश्चिम बंगाल को आबू के तृतीय विश्व शान्ति महासम्मेलन में सम्मिलित होने का निमंत्रण देते हुए

ब्र.कु. शारदा गुजरात हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश भ्राता पी.एस. पोटी को राखी बांध रही है ।

नई दिल्ली में ब्र.कु. शान्ति आदरणीय भ्राता एगोसटिनो एम्बैसीडर होली सी को पावन राखी बांधते हुए ।

सोलापुर-ब्र.कु. सोम प्रभा जी भ्राता सुशील कुमार शिंदे अर्थ एवं पालक मंत्री महाराष्ट्र राज्य को राखी बांधते हुए ।

Regd. No. 10563/65-D, (E)—70

दिल्ली राजौरी गार्डन से राखी के पावन पर्व पर कृषि मंत्री भ्राता राऊ वीरेन्द्र सिंह जी को ब्र.कु. शक्ति राखी बांधते हुए ।

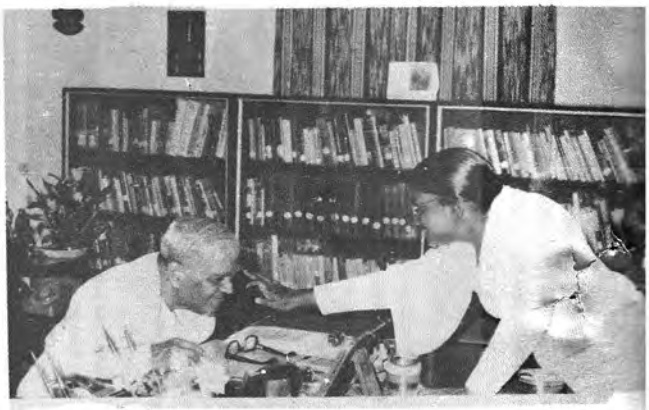

त्रिवन्द्रम में ब्र.कु. कलावती केरल के राज्यपाल भ्राता रामचन्द्रन जी को आत्म-स्मृति का तिलक देते हुए ।

इन्डोनेशिया के प्रसिद्ध हिन्दु-बौद्ध गुरु को ब्र.कु. सुदेश तथा वेन्डी आध्यात्मिक साहित्य भेंट करते हुए ।

ब्र.कु. राज जी नेपाल के सुपरिमकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश भ्राता नयन कुमार खत्री जी को राखी बांधने के बाद आत्म स्मृति का तिलक लगा रही है ।

राखी बंधवाने के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य को ध्यान पूर्वक देखते हुए भारत सरकार के श्रम मंत्री भ्राता पाटिल जी । साथ में ब्र.कु. चक्रधारी जी सधा जी खड़ी है ।

शिमला के राज्यपाल भ्राता होकीकी सीमा जी को ब्र.कु. राज जी पवित्रता की सूचक राखी बांध रही है।

अमृत सूची

१. दो फरिश्ते चले शान्ति का सन्देश देने एक पश्चिम की ओर और एक पूर्व की ओर	१	८. तनाव से मुक्ति	१७
२. जीवन की जिम्मेदारी (सम्पादकीय)	२	९. सचित्र समाचार	१९
३. इस जीवन के अन्त में क्या होगा ?	४	१०. उन्नति के पथ पर	२३
४. सचित्र समाचार	५	११. सेवा समाचार (चित्रों में)	२५
५. गलतफहमी (कहानी)	९	१२. सूक्ष्म ईश्वरीय सेवाएं और राजयोग विद्यापीठ	२९
६. सेवा समाचार (चित्रों में)	११	१३. पूछ अपने से (कविता)	३१
७. युवजन शान्ति अधिपत्र	१५	१४. आध्यात्मिक सेवा समाचार	३२

दो फरिश्ते चले शान्ति का सन्देश देने एक पश्चिम की ओर और एक पूर्व की ओर

दादी प्रकाशमणि जी की अमरीका एवम् यूरोप के देशों की यात्रा

प्रजापिता ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी 'सच्ची शान्ति तथा विश्व बन्धुत्व' की भावना का ईश्वरीय संदेश देने हे तु ६ सप्ताह के लिए अमरीका तथा यूरोप के देशों में वहाँ के भाई-बहनों के निमन्त्रण पर गई हैं । दादी जी की यात्रा बम्बई से ३० अगस्त को प्रारम्भ हुई और सर्व प्रथम वे न्यूयार्क में उतरेंगी । वहाँ से टोरन्टो, मान्ट्रीअल, सान अन्टोनियो, सान फ्रांसिस्को, लॉस एन्जिलिस, मेक्सिको, ब्राजील, मियामी, टेम्पा, टस्केगी, लन्डन, पेरिस, फ्रेंकफर्ट, कोलोन, हेमबर्ग स्विटजरलैण्ड, रोम आदि देशों में जाने का कार्यक्रम है । अनेक अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त, दादी जी को संयुक्त राष्ट्र संघ से भी निमन्त्रण प्राप्त हुआ है जहाँ वे उनकी एक मुख्य सभा को सम्बोधित करेंगी वे ५ सितम्बर से ७ सितम्बर तक संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्यालय में आयोजित एन.जी.ओ./डी.पी.आई. के वार्षिक सम्मेलन में भी सम्मिलित होंगी । वहाँ होने वाली विश्व की धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों की एक सभा में भी वे अपना संदेश देंगी । इसी प्रकार के अन्य अधिवेशनों में भी आपको प्रमुख भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया गया है ।

राजयोगी ब्रहमाकुमार जगदीश चन्द्र जी की विदेश यात्रा

प्रजापिता ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्य प्रवक्ता तथा इस विद्यालय के साहित्य विभाग के मुख्य सम्पादक एवं महान लेखक भ्राता जगदीश चन्द्र जी ईश्वरीय सेवा अर्थ लगभग २ महीने के लिए आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड तथा एशिया के कुछेक देशों की यात्रा पर गये हैं । उनकी विदेश यात्रा का विवरण इस प्रकार है - ३१ अगस्त को वे दिल्ली से रवाना होकर सिंगापुर होते हुए २ सितम्बर को पर्थ पहुँचे । वहाँ से वे एडेलाइड, मेलबोर्न, होबर्ट, केनबरा, सिडनी, गोल्ड कोस्ट, ब्रिसबेन और फिर वहाँ से २१ सितम्बर को न्यूजीलैण्ड की ओर रवाना होंगे । न्यूजीलैण्ड में क्राईस्ट चर्च वेलिंगटन, ऑकलैण्ड में ईश्वरीय सन्देश देते हुए वे बाली, जकार्ता, सिंगापुर, कवला लामपुर, हांगकांग, मनीला, टोकियो, बैंकाक, रंगून, काठमाण्ड में ईश्वरीय पैगाम पहुचायेंगे ।

आस्ट्रेलिया के प्रमुख शहरों में 'पुनर्जीवन' अथवा 'मौत के बाद जीवन' आदि विषयों पर उनके प्रवचन होंगे । न्यूजीलैण्ड में अध्यात्म और विज्ञान अथवा आध्यात्मिकता का विज्ञान विषय पर वे स्पष्टीकरण करेंगे । सिंगापुर में उनकी मुलाकात कुछ गणमान्य व्यक्तियों से होगी जिन्हें पीस-चार्टर (Universal Peace Charter) भेंट किया

(शेष पृष्ठ ३ पर)

सम्पादकीय

जीवन की जिम्मेवारी

आज मनुष्य ने अपने ऊपर कई प्रकार की जिम्मेवारियाँ ले रखी हैं। पायः हरेक गृहिणी समझती है कि बच्चों की देखभाल, घर की चीजों की संभाल और घर में हरेक की सुख-सुविधा का ख्याल करना उसकी जिम्मेवारी है। हर गृहस्थी यह मानकर चलता है कि जीविकोपार्जन की ओर ध्यान देते हुए खान-पान, रहन-सहन के साधन जुटाना, घर के सदस्यों को संरक्षण देना, दवा-दारु के लिए प्रयत्न करना इत्यादि इत्यादि उसकी जिम्मेवारी है। हर छोटा बच्चा भी समझता है कि अपनी पुस्तकों, अभ्यास-पुस्तिकाओं (Exercise Books), पेन, पेन्सिलों इत्यादि को संभाल कर रखना पतिदिन समय पर स्कूल जाना और अध्यापक द्वारा बताए हुए अध्ययन कार्य को घर में ठीक रीति से करना तथा घर में भी छोटे-मोटे काम में हाथ बटाना, यह उसकी जिम्मेवारी है। जिस घर में हर कोई अपनी जिम्मेवारी को समझता है, जिस दफ्तर में हर कोई जिम्मेवारी से अपना-अपना कार्य करता है और जिस कारखाने में कर्मचारी अपनी-अपनी जिम्मेवारी को अनुशासन-बद्ध होकर करते हैं, वह घर, दफ्तर या कारखाने सदा सुव्यवस्थित, समुन्नत, सौन्दर्य पूर्ण, सुचारु और सुदृढ़ता-युक्त दिखाई देते हैं। इसी प्रकार जिस देश के नागरिक कर्त्तव्य-परायण होते हैं, वह देश सब देशों की निगाहों में नभमण्डल में चमकते हुए तारे की तरह से ध्यान आकर्षित करता है। जिस किसी भी संस्था के सदस्य अपने-अपने कर्त्तव्य को अथवा, अपनी-अपनी जिम्मेवारी को स्फूर्त्ति, लग्न, एकता और कर्मठता से निभाते हैं, वह संस्था भी दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करती है। एक सुन्दर गुलदस्ते की तरह सुगन्धित प्रतीत होती, एक सफल टीम की तरह दिखाई देती और शूरवीरों की एक सेना के समान कदम से कदम मिलाकर, हाथ से हाथ जुड़ाकर, उत्साह और उमंग तथा एकता और न्योछावर-भाव के आधार पर सदा विजयी दिखाई देती है। इस प्रकार, हर क्षेत्र में, हर आयु वर्ग में तथा समाज के हर सदस्य में कर्त्तव्य-पालन और अपनी-अपनी जिम्मेवारी निभाने का बहुत बड़ा महत्व है।

परन्तु उपरोक्त प्रकार से अपनी-अपनी जिम्मेवारी निभाने के अतिरिक्त हरेक पर इनसे भी बड़ी एक और जिम्मेवारी है जिसकी ओर आज मनुष्य का पूरा ध्यान नहीं है। वह है अपने-अपने जीवन की जिम्मेवारी। हरेक मनुष्य ऐसे ही कर्म करे जिससे कि न वह स्वयं दुःखी हो और न दूसरे दुःखी हों – यह जिम्मेवारी किन्हीं साधुओं, सन्तों, महात्माओं ऋषियों या योगियों की जिम्मेवारी नहीं है बल्कि हरेक की जिम्मेवारी अथवा हरेक का परम कर्त्तव्य है। गृहिणी घर की जिम्मेवारी तो निभाये परन्तु ऐसे तरीके से कि जिससे उसके कर्म विकर्म न हों। एक गृहस्थी जीविकोपार्जन करे और बच्चों के लालन-पालन आदि कर्त्तव्यों को भी निभाये परन्तु साथ-साथ इस बात का भी ख्याल रखे कि वह सदाचार-युक्त, सद्व्यवहार युक्त और सद्भावना-युक्त कार्य करे। इसी पकार हर छोटे बच्चे पर भी यह जिम्मेवारी है कि वह सच्चरित्र, सम्मान पूर्वक और सुशासित रीति से कर्त्तव्य परायण हो। संक्षेप में कहने का भाव यह है कि हरेक व्यक्ति अपने जीवन में ऐसे ही कार्य करे जिससे कि संसार में सुख और शान्ति की वृद्धि हो और वह स्वयं भी भविष्य में दुःख और अशान्ति का भागी न बने।

परन्तु इसके लिए जरुरी है कि मनुष्य कर्म, अकर्म और विकर्म की गुह्य गति को जाने, श्रेष्ठ कर्म करने के लिए अपने मनोबल को बढ़ाये और जीवन में हर परिस्थिति में शान्ति बनाए रखने मे लिए सहज राजयोग रुपी कला को सीखे वर्ना इसके बिना जीवन की जिम्मेवारी को नहीं निभाया जा सकता।

परन्तु आज विद्यालय, प्रशिक्षण केन्द्र, सामाजिक संस्थाएँ इत्यादि अन्यान्य जिम्मेवारियों के लिए मनुष्य को तैयार करती हैं परन्तु अपने जीवन की जिम्मेवारी के लिए न तो वे मनुष्य को किसी विद्या-विशेष द्वारा शिक्षित करती हैं, न इस बात की ओर उसका ध्यान खिचवाती हैं और इस महत्त्वपूर्ण बात पर जोर डालने की तो बात ही दूर रही। उनके ध्यान आकर्षण न कराने का यह अर्थ नहीं कि जीवन की जिम्मेवारी का महत्त्व कोई कम हो जाता है। वह तो ज्यों का त्यों रहता ही है। हरेक मनुष्य को अपने कर्मों के खाते को स्वयं चुकाना तो पड़ता ही है। उसके अच्छे कर्म रहे हों तो उसका सुफल भी वह भोगता है और अपने बुरे कर्मों का कुफल भी। अतः वास्तव में हरेक व्यक्ति को स्वयं ही इस ओर ध्यान देना चाहिए। तो भी माता-पिता और शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का यह कर्त्तव्य है कि वे अबोध बालकों तथा बालिकाओं को जीवन की जिम्मेवारी के लिए भी साथ-साथ तैयार करते जाएँ। क्योंकि उस आयु में उन्हें कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का भेद अथवा दुःख-। जनक और सुखोत्पादक कर्मों में अन्तर या पाप और पुण्य की सूझ-समझ अभी नहीं होती। जो मनुष्य अपने जीवन की जिम्मेवारी को नहीं समझते या समझने के लिए तैयार नहीं होते अथवा समझते हुए भी उसे नहीं निभाते, वे गोया अपने शत्रु आप हैं जो अपने मार्ग में स्वयं काँटे बोते

हैं। इतना ही नहीं, वे अपनी गलत मिसाल से दूसरों को भी गुमराह करने के निमित्त बनते हैं। वे गलत तरीके से पैसा कमाकर, मनुष्य के लिए अभक्ष्य पदार्थों को अपना भोजन बनाकर, अपनी कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों द्वारा अमानवीय, अशोभनीय अथवा अपवित्र कर्म करके संसार में कुरीति और कनीति फैलाने के निमित्त बनते हैं।

हर मनुष्य को इस बात का एहसास होना चाहिए कि आज के युग में जैसे अन्य कइ बातों को जानना जरुरी है वैसे ही मनुष्य जीवन के महत्त्व को समझना, उसमे मूल्य को जानना अपनी शक्तियों, समय और धन आदि को ठीक रीति से प्रयोग करने के विधि-विधान का ज्ञान प्राप्त करना अन्य सब बातों से भी अधिक आवश्यक हैं क्योंकि इसके साथ ही मनुष्य के जन्म जन्मान्तर के सुख, दुःख, संस्कार और आचार जुड़े हैं। वास्तव में इसे ही धर्म ज्ञान कहते हैं। कर्त्तव्य बोध के बिना आध्यात्मिक ज्ञान अथवा धार्मिक विद्या निरर्थक है।

जगदीश

पृष्ठ १ का शेष)

अपने व्यस्त कार्यक्रम के दौरान, वे उपरोक्त देशों के प्रमुख व्यक्तियों, सरकारी आफीसरों, धार्मिक नेताओं तथा हर क्षेत्र के अनेक गणमान्य व्यक्तियों से भी मुलाकात करेंगी ।

इन देशों का भ्रमण करके तथा अनेकानेक आत्माओं को विश्व-प्रेम की जागृति का दिव्य संदेश देकर तथा अपनी रूहानी दृष्टि व प्रेरणादायक प्रवचनों से उनमें एक नई उमंग भरकर दादी जी १३ अक्टूबर १९८४ को भारत की राजधानी, दिल्ली में लौटेंगी और यहाँ २ दिन रुककर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय माऊण्ट आबू में प्रस्थान करेंगी ।

जाएगा । सिंगापुर में ही 'पुनर्जन्म' पर भी उनके प्रवचन होंगे । हांगकांग में आपके प्रवचनों के विषय होंगे - (१) शान्ति - एक साकार होने वाला स्वप्न, (२) माइन्ड - योअर ओन बिजनेस, तथा (३) मौत के बाद क्या ? इसके अतिरिक्त वे वहाँ के धार्मिक नेताओं से भी मिलेंगे । मनीला में आपके प्रवचन 'मौत के बाद क्या' तथा 'शान्ति' नामक विषयों पर होंगे ।

इन सभी देशों में सभी क्षेत्रों के गणमान्य व्यक्तियों - राजनीतिज्ञों, उद्योगपतियों, धार्मिक नेताओं, शिक्षा विभाग के प्रमुख आदि से आपकी व्यक्तिगत मुलाकात होगी ।

विदेश यात्रा के समाप्त होने के बाद आप भारत के भी कुछ मुख्य शहरों का भ्रमण करते हुए तथा अपनी विदेश यात्रा के अनुभवों से वहां के लोगों को लाभान्वित करते हुए नवम्बर के द्वितीय सप्ताह में दिल्ली पधारेंगे ।

पृष्ठ ४ का शेष)

अन्तिम समय के दृश्य

परन्तु शीघ्र ही वह समय आने वाला है जब एक ओर देश-भर में अन्न और धन की कमी होगी, घर में सास-बहू का कलह और रोग-शोक अब से भी अधिक होगा । एक ओर गृह-युद्ध हो रहे होंगे दूसरी ओर अग्नि अपनी लपेट में भवनों और जीवों को भस्म कर रही होगी, तीसरी ओर बाढ़ अपने वेग से मकानों-दुकानों, दफ्तरों और कारखानों को गिराती हुई, पशुओं और पुरुषों को, अथवा जन-धन को डुबाती हुई, उसे वीरान करती हुई जा रही होगी । उस समय मनुष्य त्राही-त्राही करेगा और ज्ञान तथा योग की शिक्षा की चेष्टा करेगा और परमपिता परमात्मा का आधार लेने की इच्छा करेगा परन्तु तब ज्ञान और योग का द्वार बन्द हो चुका होगा, तब स्वर्ग का फाटक खुल ही नहीं सकेगा । तब परम पिता परमात्मा अपना कर्त्तव्य करके परमधाम वापस चले जा चुके होंगे । तब तो मनुष्य के सामने धर्मराजपुरी ही के दण्ड आयेंगे और उसे विनाश के ताप के अतिरिक्त, यम की यातनाएं भी सहन करनी पड़ेंगी ।

अब तो फिर भी सहज ही राशन मिल जाता है, देश में स्थिति कुछ शान्त है, घरों में कुछ आराम है, प्रकृति अभी कुछ सन्तुलन में है और अन्न-धन की समस्या इतनी विकट नहीं है । परन्तु फिर जब मनुष्य को घंटों राशन के लिए पंक्ति में खड़ा होना पड़ेगा, दवा लेने के लिए घण्टों भीड़ में प्रतिक्षा करनी पड़ेगी और जब देश में वातावरण में तनाव तथा अशान्ति होगी तब मनुष्य की इच्छा होने पर भी वह ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करने तथा योग सीखने नहीं आ सकेगा । अतः मनुष्य को चाहिए कि इन अन्त के दृश्यों को ध्यान में रखकर अभी ही लाभ उठा ले वरना कुद ही वर्षों में परिस्थितियों में बहुत परिवर्त्तन हो जाने वाला है और ज्ञान तथा योग का द्वार बन्द हो जाने वाला है !!

इस जीवन के अन्त में क्या होगा ?

ले. ब्रह्माकुमारी सन्देशी, भुवनेश्वर

आज मनुष्य की दिनचर्या क्या होती है ? वह प्रात: उठकर समाचार पत्र पढ़ता है और फिर दन्त धावन करके, स्नान करके, नाश्ता करता है अथवा मार्केट से दूध, सब्ज़ियाँ आदि ले आता है और फिर दफ्तर अथवा दूकान पर जाने की तैयारी में लग जाता है । कोई भक्त हो तो पहले वह थोड़ी भक्ति भी कर लेता है, बाद में वह अपना सारा दिन जीवन-निर्वाहार्थ धन-उपार्जन में ही लगा रहता है और सायंकाल थका-माँदा जब लौटता है तो घर वालों के तकाज़े और माँगें पूरी करता है । कोई औषधि लानी हो, कोई राशन इकट्ठा करना हो, किसी मित्र-सम्बन्धी का स्वास्थ्य-समाचार पूछना हो, उससे निपट कर वह पुन : रेडियो पर कुछ गीत और समाचार सुनकर मन को थोड़ा बहला लेता है और तब सो जाता है । पुन: वह प्रात:काल उठता है और वही पहले वाली दिनचर्या शुरू कर देता है । हाँ, कभी वह किसी देवी या देवता की पूजा भी कर लेता है, कभी माला फेर भी लेता है, परन्तु उस समय भी उसका मन तो एक अत्यन्त तीव्रगामी घोड़े की तरह भाग रहा होता है ।

राम भजते सुए भी मन हमारा

परन्तु मानव यह नहीं जानता कि उसके जीवन का लक्ष्य क्या है ? मैं हूँ कौन, मैं आया कहाँ से हूँ और तुझे जाना कहाँ है'— इसकी उसे कुछ सुध बुध नहीं है । यह सृष्टि रूपी नाटक कैसे चलता है, इसका आदि-मध्य-अन्त क्या है, इसके बारे में वह कुछ भी नहीं जानता । सारा दिन वह खाने-पीने, रोग-शोक, विषय-भोग और देह-गृह ही के धन्धों में लगा देता है और इस प्रकार जीवन को हीरे-तुल्य बनाने की बजाय उसे कौड़ियों के मोल गँवा देता है । भोजन के लिए कमाने, भोजन बनाने, खाने, पचाने और फिर शौच आदि करके पुन: भोजन करने के योग्य बनने ही में लगा रहता है मानो वह खाने ही के लिए पैदा हुआ हो । मानव-जीवन में योग का जो आनन्द है, पवित्रता में जो शान्ति और शक्ति है दिव्य गुणों का जो सच्चा और स्थायी सुख है, उसका अनुभव तो उसे बिल्कुल ही नहीं होता । वह एक ओर शिव पर पानी का लोटा चढ़ाता है तो दूसरी ओर विषय-विकारों का अर्थात अशिव और अमंगलकारी कर्मों को भी छोड़ना नहीं चाहता । एक ओर वह देवी-देवताओं की पूजा करता है परन्तु दूसरी ओर वह दिव्य गुणों को पास नहीं आने देता । वह राम-राम भी भजता रहता है परन्तु सारा दिन उसका मन हराम की बातें सोचता रहता है और रात्रि को तो वह काम ही का गुलाम बन जाता है । उसे दु:ख के काँटे भी लगते हैं, परन्तु वह सुख-धाम की यात्रा पर चलने के लिए तैयार भी नहीं होता । मन के भटकने की शिकायत वह करता है परन्तु मन को टिकाना कहाँ है, यह जानने के लिए भी वह अवकाश नहीं निकलता । झंझटों का ढंढेरा उसने अपने गले में खुद ही डाल दिया है और उसे बजाता है तो भी परेशान होता है, नहीं बजाता है तो भी बोझ से थका रहता है । परन्तु उन्हें उतार परे करने की युक्ति को भी नहीं अपनाता ! सोचने की बात है कि इस प्रकार चलने से मनुष्य की गति क्या होगी ? विकर्मों का बोझ अपने सिर पर चढ़ाते जाने से बोझू ही तो मरेगा ? जीवित होते चिन्ता रूपी चिता पर जलना, यह स्थिति कब तक रहेगी ?

अब उसकी ऐसी दिनचर्या, ऐसा जीवन, ऐसी अवस्था देखकर स्वयं परमपिता शिव आये हैं उसे शान्तिधाम ले जाने अथवा सुखधाम की राह बताने । वह आये हैं उसकी चिन्ताओं का भार हरने और विकारों द्वारा तप्त हृदय को ज्ञानामृत से शीतल करने परन्तु अब भी यह मूर्ख मनुष्य कहता है कि मेरे पास समय नहीं है ! खाने और पचाने के कार्यों से उसे अवकाश ही नहीं है !

समय नहीं मिलता

मनुष्य कहता है कि मुझे धन-उपार्जन से समय ही नहीं बचता कि मैं ज्ञान-योग की बात सुनूं । परमपिता परमात्मा कहते हैं — "मैं इस ईश्वरीय ज्ञान और सहजयोग द्वारा तुम्हें श्री नारायण और श्री लक्ष्मी के समान बना दूंगा और तुम्हें अनगिनत एवं अतुल धन-सम्पत्ति दूंगा जो कि अनेक जन्म तुमसे छूटेगी ही नहीं । मनुष्य कहता है कि मुझे शरीर की पालना के लिए अथवा उसे स्वस्थ रखने के विचार से मुझे व्यायाम करना पड़ता है, सैर करनी पड़ती है और मुझे बाल-बच्चों के लिए भी औषधि-दवाई लानी पड़ती है, इसलिए मुझे समय नहीं मिलता । परन्तु परमपिता परमात्मा कहते हैं कि उन सब कर्त्तव्यों को निभाते हुए आप थोड़ा-सा समय इस ईश्वरीय शिक्षा के लिए निकालो तो मैं आपको सदा के लिए निरोगी कर दूंगा और सभी सुखी सम्बन्धी दूंगा । इस प्रकार एक घण्टा प्रति दिन इस ईश्वरीय ज्ञान और योग के लिए निकालने वाले मनुष्य को परमपिता परमात्मा अखूट सम्पत्ति, सतोगुणी और निरोगी शरीर, सुख और शान्ति वाली दुनिया में देने का वचन करते हैं और इस दुनिया में भी आनन्द और शान्ति का वरदान देते हैं । मनुष्य दिन-भर काम करने से प्रतिदिन अधिकाधिक २००० रुपये कमा लेता होगा, वह औषधि-उपचार करने से थोड़ा शान्त और सुखी हो जाता होगा परन्तु परमात्मा तो थोड़े ही समय के व्यय के फलस्वरूप सभी मनोकामनाओं को एक-साथ ही पूरा करने का वचन करते हैं । तो भी मनुष्य माया का मुरीद अथवा दास बन कर, परवश हुआ कहता है कि मेरे पास समय नहीं है !!

(शेष पृष्ठ ३ पर)

भुवनेश्वर सेवा केन्द्र पर उड़ीसा राज्य के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता जुगल किशोर पटनायक पधारे थे, संग्रहालय अवलोकन के पश्चात् शिव बाबा के याद में ब्र.कु. बहनों के साथ खड़े हैं ।

नेपाल के विदेश मन्त्री भ्राता पदम बहादुर खत्री जी को ब्र.कु. शीला बहन राखी बांध रही है ।

सुजानपुर टोहरा में प्रदर्शनी देखने के पश्चात् हि.प्र. के उद्योग मन्त्री शिव कुमार जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सरला, साथ में प्रेम बहन ।

राजस्थान के मन्त्री भ्राता चन्दन मल वैद्य को ब्र.कु. पूनम राखी बांधने के पश्चात रहस्य स्पष्ट कर रही हैं ।

वारंगल सेवाकेन्द्र पर केन्द्रीय मन्त्री भ्राता वेंकट सुब्बय्या के पधारने पर उन्हें ब्र.कु. शान्ता बहिन राखी बांधते हुए ।

बिहार के मुख्य मंत्री भ्राता चन्द्रशेखर सिंह को पटना में ब्र.कु. नि
पुष्पा 'पवित्र बनो, राजयोगी बनो' की राखी बांध रही हैं ।

ब्र.कु. कमलेश, भ्राता रघुनाथ पटनायक उड़ीसा के वित्त मंत्री को पावन राखी बांधते हुए ।

बिहार के उद्योग एवं ईख मंत्री भ्राता ललितेश्वर शाही जी को ब्र.कु. निर्मल पुष्पा जी राखी के पश्चात प्रसाद देती हुई, साथ में इन्द्रा बहन एवं रमेन्द्र भाई ।

कलकत्ता में ब्र.कु. गीता पश्चिम बंगाल के जेल कल्याण मन्त्री भ्राता देवव्रत बंदोपाध्याय को राखी बांधने के पश्चात आत्मस्मृति का टीका देते हुए ।

ब्र.कु. सन्देशी भ्राता जुगल किशोर पटनायक, स्वास्थ मंत्री उड़ीसा को पावन राखी बांध रही हैं ।

ब्र.कु. सन्देशी उड़ीसा राज्य के मंत्री भ्राता भजनव बेहरा को राखी बांध रही हैं ।

ब्र.कु. सन्देशी व ब्र.कु. कमलेश भ्राता बासुदेव महापात्र मंत्री राजस्व उड़ीसा को पावन राखी बाधते हुए ।

कलकत्ता में ब्र.कु. कानन नैनी महाचार्य, पश्चिम बंगाल के सिंचाई एवं जल विभाग के मन्त्री को पावन राखी बांधते हुए ।

पटना बिहार के शिक्षा एवं राज्यभाषा मंत्री भ्राता नागेन्द्र झा जी को ब्र.कु. निर्मल पुष्पा जी राखी बांध रही हैं ।

रांची में बिहार के योजना तथा विकास मंत्री भ्राता बन्दी उरांव को ब्र.कु. निर्मला पवित्रता सूचक राखी बांध रही हैं ।

रायपुर में म.प्र. के पूर्व मुख्यमन्त्री श्यामा चरण जी शुक्ल को राखी बांधती हुई ब्र.कु. साधना ।

न्यायाधीशों को राखी का ईश्वरीय सन्देश

दिल्ली राजयोगभवन से राखी के पावन पर्व पर न्यायाधीश असित सेन को ब्र.कु. शक्ति पावन राखी बांधते हुए ।

चांदनी चौक दिल्ली—ब्र.कु. इन्द्रा जी अन्तरराष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश को शिव बाबा का ज्योति उपहार रूप में दे रही हैं ।

धर्मशाला में ब्र.कु. उमा जी भ्राता एस.एस. आहूजा जी डिस्ट्रिकट तथा सैशन जज कांगड़ा डिविजन को राखी बांध रही हैं ।

ब्र.कु. विमला, ब्र.कु. इन्द्रा उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता मुखर्जी जी उनकी पत्नि को राखी बांध रही है ।

कटक में आध्यात्मिक संग्रहालय में पधारने पर ब्र.कु. कमलेश, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता रंगानाथ मिश्रा का स्वागत

जबलपुर में मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति भ्राता डी.एम. भट्ट को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सरोज बहन ।

जबलपुर उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के.एन. शुक्ला को ब्र.कु. रेखा पावन बांध रही हैं ।

पत्र-पत्रिका के संपादकों को दिव्य संदेश

दिल्ली में, हिन्दुस्तान टाईम्ज के मुख्य सम्पादक भ्राता एन.सी. मैनन को ब्र.कु. शुक्ला आत्म स्मृति का तिलक लगा रही हैं ।

जालन्धर तथा देहली से प्रकाशित होने वाले हिन्द समाचार पत्र के सम्पादक भ्राता अश्विनी मित्रा को ब्र.कु. कृष्णा जी राखी बांधते हुए ।

जालन्धर में ब्र.कु. कृष्णा जी दैनिक मिलाप पत्र के प्रमुख सम्पादक भ्राता यशपाल जी को पवित्रता का सूत्र राखी बांध रही हैं

ब्र.कु. पुरबी बहन कलकत्ता के "हिन्दी दैनिक संमार्ग" के सम्पादक को राखी बांध रही हैं ।

लखनऊ आकाशवाणी रेडियो डायरेक्टर भ्राता के.के. नैय्यर सेवा केन्द्र पर पधारे थे । उनको राखी बांध कर प्रसाद खिलाया गया

भ्राता पी.डी. जैन सहायक सम्पादक, नवभारत टाईम्ज को ब्र.कु. शुक्ला राखी बांध रही है ।

नवभारत टाईम्ज के सहायक सम्पादक डॉ. वेद प्रताप वैदिक को राखी बांधने के पश्चात ब्र.कु. शुक्ला तिलक दे रही हैं ।

हिन्दुस्तान हिन्दी के मुख्य सम्पादक भ्राता बी.के. मिश्रा जी को ब्र.कु. शुक्ला पावन राखी बांधते हुए

कहानी

ग़लतफहमी

ले०-ब्र० कु० चक्रधारी, शक्ति नगर, दिल्ली

प्यारे बच्चों, आज हम आपको एक कहानी सुनाते हैं जिसमें आप देखोगे कि ग़लतफहमी का क्या परिणाम होता है। एक व्यक्ति दीवाली के दिनों में कुछ सौदा खरीदने गया। और चीजों के साथ उसने चीनी के कुछ खिलौने भी खरीदे। बाजार में तरह-तरह के खिलौने रखे थे। चीनी को ढाल कर साधुओं के रूप में भी खिलौने बने हुए बिक रहे थे। उसे वे खिलौने अच्छे लगे और चूँकि उसके घर में वह, उसकी धर्मपत्नी तथा उसका बच्चा-तीन ही व्यक्ति थे इसलिए वह तीन साधु रूप खिलौने ले आया। घर में पहुंचकर उसने वे खिलौने एक अलमारी के ऊपर रख दिये।

संयोग की बात है कि उसी दिन उसके पास तीन साधु भी आ पहुँचे। वह व्यक्ति भक्ति-भाव वाला और साधु के स्वभाव वाला था। उसने उनको कहा – "महात्मा गण, यहाँ बैठक में बैठिये। आज दिवाली का शुभ दिन है। अभी थोड़ी देर में ही भोजन बना जाता है, आप उसे स्वीकार कर आर्शीवाद देकर जाइये। आज के दिन हम आपको केवल सूखा आटा देकर नहीं लौटायेंगे।"

साधुओं ने निमन्त्रण स्वीकार किया और कहा – "यजमान, भगवान तेरा भला करे। दाता की कृपा से तेरा भण्डारा सदा भरपूर रहे।" फिर वे एक दूसरे की ओर मुड़कर कहने लगे कि देखो ऐसे भी तो भले आदमी संसार में हैं जो यह सोचते हैं कि साधुओं को सूखा आटा देंगे तो बेचारे किस समय सूखी रोटी बनाकर खायेंगे और आटे के साथ दाल, सब्जी, नमक, मसाला, घी इत्यादि कहाँ से ले आयेंगे। मनुष्य केवल आटा ही तो गूँध कर नहीं खा जाता।

दूसरा साधु बोला – "ठीक बात है। आटे के साथ और कई चीजें चाहिए, तभी उसका नाम पड़ता है – भोजन। परन्तु आज यह बत कितने लोग सोचते हैं।"

तीसरा साधु बोला – "तुम ठीक कह रहे हो। कोई विरला व्यक्ति ही ये बातें सोचता है। यह भला आदमी है। चलो, बैठ जाओ, आज यहीं भोजन करेंगे।"

गृहस्थी बोला – "यह सब आप का आर्शीवाद है। धन्य भाग्य कि आपने हमारा निमन्त्रण स्वीकार किया। बिराजिए। अभी थोड़ी ही देर में खाना तैयार हो जाता है।"

जब वह गृहस्थी साधुओं को घर में बिठाकर निजि कमरे में आया तो उसका छोटा बच्चा तोतली भाषा में बोला – "पापा, ये सामने क्या है?" गृहस्थी बोला – "बेटा, ये तीन साधु हैं।"

बच्चा – "यह किस काम आयेंगे, पापा?"

गृहस्थी – "इन्हें हम खा जायेंगे। एक को तुम, एक को मैं और एक को तुम्हारी मम्मी।"

बच्चा – "तो लाओ, अभी खा लें। देर क्यों करें?"

गृहस्थी – "बेटा, ये साधु खाना खा लें, फिर हम इन्हें खा जायेंगे।"

जिस बैठक में साधु बैठे थे, वहाँ उन्हें यह सारा वार्त्तालाप सुनाई दे रहा था। उन्होंने वे खिलौने तो देखे ही नहीं थे और न ही पिता व पुत्र के वार्त्तालाप में खिलौने शब्द का प्रयोग हुआ था। उन्हें तो यह सुनाई दिया था कि साधुओं को खाना खिलाने के बाद गृहस्थी धर्मपत्नी व उसका बच्चा एक-एक साधु को खा लेंगे। बात तो हो रही थी चीनी के साधुओं की परन्तु उन्होंने समझा कि हम जो साधु हैं, यह उन्हें खाने की योजना बनाई जा रही है। और हमें खाना खिलाने की बात तो चकमा देकर हमें काबू करने की योजना-मात्र है। परन्तु वास्तव में तो हमें हलवा और चटनी न खिलाकर हमारा ही हलवा और चटनी बनाई जाएगी।

एक साधु दबे-दबे स्वर में बोला– "अरे, तुम सुन रहे हो, ये क्या कह रहे हैं। ये तो नर-भक्षी प्रतीत होते हैं।"

दूसरा बोला – देखो यह व्यक्ति बातें कैसी मीठी करता था। बाहर से हमें कहता है – "साधु जी और अन्दर से समझता है, चलो हमें अच्छा शिकार मिल गया।"

तीसरे साधु के चेहरे पर पहले ही काफी डर के चिह्न थे। वह आधा उठ खड़ा हुआ और घबराहट से बोला – "अरे भागो, अब देर मत करो। इस कलियुग में ऐसा ही होता है। लोग बाहर से कुछ और बातें करते हैं और अन्दर से कुछ और होते हैं।"

इस प्रकार कानाफूसी कर वे तीनों जूते पहन भागने लगे।

गृहस्थी ने जब भागने की आहट सुनी तो उसने बैठक में जाकर देखा वहाँ साधु तो थे नहीं। दरवाजे से बाहर निकला तो देखा कि साधु बाहर भागते जा रहे हैं। सोचने लगा कि यह तो अच्छा नहीं हुआ। आज के दिन घर आए हुए साधु भोजन के बिना भागते जा रहे हैं। यह तो हमारे लिए एक अभिशाप है। यह सोचते ही वह उनके पीछे भागा। और ऊंचे स्वर से कहने लगा – "हे साधु जी , महाराज, रूको। ठहरो, भोजन करके जाओ। भोजन तैयार है। महाराज, भोजन किये बिना मत जाओ। साधुवर, भाग क्यों रहे हो?

आगे-आगे साधु और पीछे-पीछे वह गृहस्थी भाग रहे थे। साधु कहते जा रहे थे कि अब हम तुम्हारे घर कभी नहीं आयेंगे। हम समझ गए कि तुम कैसे व्यक्ति हो। दूसरा बोला – अच्छा हुआ, जो हम बच गए।

गृहस्थी बोला – "यह आपकी गलतफहमी है। अरे महाराज, तुम रुको तो सही। आखिर बात तो बताओ कि हुआ क्या है। हमने भूल क्या की जो आप बिना बताए वहाँ से भाग खड़े हुए।"

साधुओं के मन में तो यह बात अच्छी तरह से बैठ गई थी कि यह व्यक्ति तो नर बलि चढ़ाने वाला व्यक्ति है। या इसका कोई और भयंकर कार्य-कलाप है और अच्छा ही हुआ जो हम इसके पंजे से बच गए वर्ना तो यह हमारा आज भुर्त्ता या कोफते बनाकर खा जाता। इस प्रकार साधु यह समझ कर भागते जा रहे थे कि यह हमें पकड़ने आ रहा है जबकि गृहस्थी वास्वत में उनके पीछे इसलिए भाग रहा था ताकि वे वापस आकर भोजन करें। साधुओं की पहली गलतफहमी से दूसरी गलतफहमी पैदा हो रही थी।

इस प्रकार वे भागते-भागते शहर से काफी आगे निकल गए और एक जंगल में पहुँच गए। साधु लोग भागते-भागते थक गए थे और वे यह भी सोचने लगे थे कि अब तो शहर से काफी आगे निकल आये हैं और शायद अब यह व्यक्ति अकेला कुछ नहीं कर सकेगा। हम इसकी कैद से तो छूट ही गए हैं और इसलिए यदि उसके मन में फिर पाप आया तो हम फिर भागना शुरू कर देंगे। यह सोचकर वे छायादार वृक्ष के नीचे बैठ गए।

इतने में वह गृहस्थी भी वहाँ आ पहुँचा। वह हाथ जोड़कर बोला – "महाराज, क्या बात थी जिसके कारण से आप नाराज हो गए और खाना खाये बिना ही आ गए। जब आपने निमन्त्रण स्वीकार किया था फिर आपके मन में क्या बात आ गई? आपके ऐसे ही लौट आने से मैं श्रापित हो जाऊँगा। आप कृपा कर वापस चलिए और अब तो भोजन भी तैयार हो गया होगा। लाइये, आपके पाँव दबा दूँ आपको व्यर्थ में कष्ट हुआ। अब चलिए।"

एक साधु बोला – "अब हम नहीं चलेंगे। आप अपने बच्चे से यह जो कह रहे थे कि हम एक-एक साधु को खा जायेंगे, वह हमने सुना था। यह सुनने के बाद हम कोई पागल थोड़े ही थे जो वहाँ बैठे रहते?"

दूसरा साधु हाँफते-हाँफते बोला – "ह ... ह... हम आपकी चालाकी ... ह ... समझ गये ..।"

तीसरा साधु बोला – "अहँ... हमने आप जैसा आदमी नहीं देखा।"

इन तीनों की बात सुनते हुए वह गृहस्थी जोर-जोर से हँसने लगा। अब मैं समझा गलतफहमी क्या है? अरे महाराज, आप भी कमाल करते हैं! कहाँ की बात कहाँ ले गए। सचमुच साधु बड़े भोले होते हैं। आप यही बात वहाँ बता देते तो यह सारा अनर्थ न होता। महात्मा जी, मैं तो बाजार से चीनी के ढले हुए खिलौने लाया था और वे तीनों साधु थे। जब बच्चे ने पूछा कि यह क्या है तो मैंने कहा कि ये साधु हैं। उसने पूछा कि ये किस काम आते हैं तो मैंने कहा कि एक को मैं, एक को तुम्हारी माँ और एक को तुम खाओगे। बच्चा हठ कर बैठा कि लाओ इसको अभी खा जाएँ। मैंने मन में सोचा कि हमने साधुओं को निमन्त्रण दिया है, उनको खिलाने से पहले हम कैसे खा सकते हैं। इसलिए मैंने बच्चे को कहा कि साधुओं को भोजन कराने के बाद हम इन्हें खायेंगे और महाराज, आपने यह समझ लिया ... यह भी कोई बात है? कोई इन्सान भला यह सोच भी सकता है?

ये सुनकर सभी साधु आश्चर्यान्वित हुए और हंसने लगे। वे बोले – "अच्छा, यह बात है। वे चीनी के खिलौने भी साधु रूप वाले थे। हमने तो न उन्हें देखा था और न ऐसा सोच ही सकते थे। हमने तो अनुमान किया कि यह चर्चा हम साधुओं के विषय में हो रही है।"

गृहस्थी – महाराज, मैं आपसे छोटे मुँह क्या कहूँ। लेकिन आज मैंने देख लिया है कि किसी ने यह सच कहा है कि बिना देखे, सुने, जाने, समझे, अनुमान कर लेने से कैसे गलतफहमी होती है। और गलतफहमी और भ्रान्ति से और भ्रान्ति पैदा होती है। मैं आपके पीछे इसलिए दौड़ रहा था कि मैं आपको वापस लिवा लाऊँ और भोजन करा दूँ और आपने सोचा कि शायद मैं आपको पकड़ने के लिए दौड़ रहा हूँ। मैंने सोचा कि पहले आपको भोजन कराकर फिर हम खायेंगे और आपने कुछ और ही सोच लिया।

पुलिस अधिकारीगण को राखी बांधी गई

कलकत्ता में ब्र.कु. गीता डी.आई.जी. जेल भ्राता भोक्तान को आत्म-स्मृति का टीका देते हुए ।

कृष्णानगर, दिल्ली में ब्र.कु. कमलमणि भ्राता सेवादास डी.सी.पी. को पावन राखी बांधते हुए ।

सोनीपत में ब्र.कु. जनक भ्राता स्वर्णजीत सिंह एस.पी. सोनीपत को राखी बांधते हुए ।

कटक में भ्राता एस.एस. पधी, पुलिस महानिदेशक को ब्र.कु. सुशीला, ब्र.कु. चरूलता राखी बांध रही हैं ।

मोगा में बी.एस.एफ. कमाण्डेण्ट भ्राता आर.एस यादव को ब्र.कु. संजीवन आत्म-स्मृति का तिलक देते हुए ।

रक्षा बंधन के सुअवसर पर बोकारो के आरक्षी अधिक्षक श्रीमति मंजूरी जरूहार को राखी बांधती हुई ब्र.कु. कुसुम ।

मंगलूर जेल में हुए आध्यत्मिक कार्यक्रम का उदघाटन करते हुए महापौर भ्राता सदाशिव भंडारी जी ।

फतहपुर जनपद के पुलिस अधिक्षक भ्राता एलेक्जेन्डर डेनियल को ब्र.कु. दुलारी राखी बांध रही हैं ।

सांपला के एस.एच.ओ. श्री प्रेम सिंह को ब्र.कु. शक्ति राखी बांधने के पश्चात् आत्म स्मृति का तिलक देते हुए ।

आगरा के डीएम. को राखी बांधते हुए ब्र.कु. बीना तथा ब्र.कु. नीलम जी दिखाई दे रही हैं

गोहाटी में भ्राता के.के. दास, जिला न्यायाधीश प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए ।

मेहसाना में ब्र.कु. सरला जिला एवं सेशन जज भ्राता कमोदिया जी को पवित्रता की सूचक राखी बांधती हुई ।

तान्दुर में न्यायधीश भ्राता विष्णु शर्मा जी तथा उनकी धर्मपत्नी को ब्र.कु. जगदेवी राखी बांधते हुए ।

ब्र.कु. गीता तिरूपति में जिला जज भ्राता जी के रामा सुब्बा रेड्डी को राखी बांधते हुए ।

दार्जिलिंग में उपायुक्त चम्पा चैटरजी को राखी बांधने के पश्चात् साहित्य भेंट करती हुई ब्र.कु. स्वर्शन जी ।

बिजापुर में सहायक आयुक्त भ्राता जी.एल. चन्द्रशेकरया को ब्र.कु. सरोजा राखी बांधते हुए ।

अलवर लायंस क्लब में ब्र.कु. पूनम जी प्रवचन करती हुई ।

बलसार में लाइन्स क्लब के प्रमुख, डॉ. उदय भाई मिस्त्री को ब्र.कु. नीता बहिन राखी बांधते हुए ।

गोवा के सबसे बड़े उद्योगपति भ्राता बसंत राव डेपे जी को राखी बांधते हुए ब्र.कु. शोभा जी. साथ में ब्र.कु. नंदीनी जी बैठी हैं ।

बंगलोर (H.A.L.) में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन डॉ. पालाक्ष तथा भ्राता केंपच्च कर रहे हैं ।

हिसार में हुए आध्यात्मिक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि भ्राता एल.डी. कटारिया उपकुलपति हरियाणा कृषि विद्यापीठ को ब्र.कु. सुदेश स्वागत करते हुए

ग्याना के उच्चायुक्त भ्राता स्टीव नारायणजी के कलकत्ता पधारने पर आयोजित कार्यक्रम में मंच पर (दाएं से) ब्र.कु. कानन, कलकत्ता उच्च न्यायालय की न्यायाधीश ज्योति माया नांग, श्रीमति स्टीव नारायण तथा भ्राता स्टीव नारायण उपस्थित हैं ।

कृष्ण नगर (दिल्ली) में आध्यात्मिक चित्रशाला के लिये निर्मित नए कक्ष उद्घाटन दृश्य । ब्र.कु. हृदयमोहिनी तथा ब्र.कु. कमलमणि दीप प्रज्जवलित करते हुए ।

फिजी में हाई स्कूल में राजयोग पर प्रवचन करती हुई ब्र.कु. भावना जी ।

रक्षाबन्धन की पूर्व सन्धया पर अहमदाबाद टाऊन हाल में आयोजित सम्मेलन "नारी स्वयं की रक्षा करने में सक्षम है" मंच पर (बाएं से) उदय प्रभा बहिन, अध्यक्षा गुजरात लेखणी मण्डल, ब्र. कु. सरला, पारू बहिन जयकृष्ण निदेशक गुजरात टूरिजम, ब्र.कु. चन्द्रिका, भ्राता गिरजा सरन, प्रो. आई.आई. एम.।

आगरा के प्रशासक (तोताराम यादव) को राखी बाँधते व ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु. विमला, ब्र.कु. सुरेश भाई ।

ब्र.कु. कमल बहन ने गोरखपुर में उपायुक्त तथा जेलर को राखी बांधी ।

दिल्ली में ब्र.कु. विमला, भ्राता महेन्द्र कुमार जैन सचिव म्युन्सीपल कान्ग्रेस, को पावन राखी बांधते हुए । ब्र.कु. इन्द्रा टीका देने की तैयारी में ।

महोबा नगर जिला हमीर पुर के विधान सभा के सदस्य भ्राता बाबू लाल तिवारी जी को ब्र.कु. आशा राखी बांधते हुए । साथ में पुष्पा बहन खड़ी हैं ।

ढेनकनाल ब्र.कु. रेनू भ्राता हलधर मिश्रा सदस्य विधान सभा गोडिया को राखी बांध रही है ।

मालविया नगर (नई दिल्ली) सेवा केन्द्र की ब्र.कु. आशा भ्राता रामजी लाल कार्यकारी पार्षद को राखी बांधते हुए ।

बेलगाम म्यूनिसिपल कारपोरेशन के मेयर भ्राता सुभाष यादव को ब्र.कु. शामला राखी बांध रही हैं ।

कृष्णानगर-देहली में भ्राता सुक्खन लाल सूद कार्यकारी पार्षद, ब्र.कु. कमलमणि से पावन राखी बंधवाते हुए ।

नई दिल्ली में ब्र.कु. आशा संसद सदस्य भ्राता सज्जन कुमार को पावन राखी बांधते हुए ।

उदयपुर में लोक सभी के सदस्य भ्राता दीन बन्धु वर्मा जी को ब्र.कु. शील जी राखी बांधते

युवजन शांति अधिपत्र

माउण्ट आबू में आयोजित विश्व शांति सम्मेलन - १९८४ में अंगीकृत

यत : हम यह स्वीकार करते हैं कि हमारा मुख्य प्रयोजन, हित या आदर्श सर्वांगीण उन्नति तथा विकास है, जिसमें शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक संवर्धन सम्मिलित है, और

यत : हम यह समझते हैं कि अन्य सभी पहलुओं को त्याग कर इन पहलुओं में से किसी एक पहलू पर बल देना अवांछनीय होगा, इसलिए हम यह मानते हैं कि हमारा प्राथमिक दायित्व यह है कि हम किसी भी अन्य प्रकार की उन्नति और विकास के लिए अपने नैतिक सिद्धान्तों का त्याग न करें या उनसे विचलित न हों, क्योंकि नैतिक सिद्धान्तों का पालन शांति के संधारण के लिए तथा समग्र उन्नति के लिए और स्वयं के विकास एवं समाज के विकास के लिए हितकर है, और

यत : हम यह मानते है कि शारीरिक ओज, युवक संगठन तथा सामाजिक संगठन का बहुत महत्व है, इसलिए हम यह मानते हैं कि युवकों का प्रथम सिद्धान्त इनका उपयोग रचनात्मक प्रयोजनों के लिए करना है न कि विनाशात्मक प्रयोजनों के लिए, और

यत : हम यह मानते हैं कि शाला तथा महाविद्यालय की संपत्ति को नष्ट करना हमारी अपनी वृद्धि और विकास में बाधा उत्पन्न करना है, और यत : हम यह समझते हैं कि राष्ट्रीय संपत्ति को जानबूझकर नष्ट करना हमारी अपनी संपत्ति को नष्ट करना है ओर संपूर्ण समाज के कल्याण तथा विकास को क्षति पहुँचाना है और हमारी अपनी सामाजिक संरचना को नुकसान पहुँचाना है, और

यत : हम यह स्वीकार करते हैं कि ज्येष्ठ व्यक्तियों के प्रति सम्यक प्रेम तथा आदर हमारी अपनी उन्नति तथा विकास के लिए हितकर है और यह कि हम उनका प्रेम तभी पा सकते हैं जब हम उनके प्रति प्रेम तथा आदर का भाव रखें, और

यत : हम यह मानते है कि युवक स्वयं को बदल कर, सकारात्मक चिंतन द्वारा, सहयोग द्वारा तथा सक्रिय सहभागिता द्वारा शांति की स्थापना में तथा नैतिक पुनर्निमाण तथा सामाजिक रूपांतरण के कार्य में बहुत उपयोगी तथा रचनात्मक भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं ।

अत :, अब विश्व शांति सम्मेलन १९८४ को युवक सभा के सहभागी हम यह घोषणा करते हैं कि :—

हम अपने स्वयं के कल्याण के लिए तथा समाज के कल्याण एवं शांति के लिए निम्नलिखित आचार संहिता को युवजन विश्व शांति अधिपत्र के रूप में अंगीकार करते हैं और हम उसका हार्दिक रूप से पालन करेंगे तथा दूसरों को भी उसके अंगीकरण तथा पालन के लिए प्रेरित तथा प्रोत्साहित करेंगें ।

१. यद्यपि हम प्रत्येक मनुष्य की प्रतिष्ठा में और अपने स्वयं के आत्म-सम्मान में विश्वास करते हैं और करते रहेंगे तथापि हम सदैव यह देखेंगे कि आत्म-सम्मान भी हमारी धारणा अन्य व्यक्तियों के प्रति तथा समूहों के प्रति सम्मान की धारणा से सामंजस्य रखती है, और इसलिए,

(क) हम विनम्रता, सहनशीलता, शालीनता और शांतिपूर्णता को मानवीय प्रतिष्ठा तथा आत्म-सम्मान का एक भाग मानते हैं और इसलिए हम ऐसे सभी प्रकार के वचनों और कर्मों से व्यक्तिगत रूप से तथा सामूहिक रूप से दूर रहेंगे जो कि दूसरों के प्रति अविनयशीलता, अशुद्धता, अप्रतिष्ठा तथा असम्मान के सूचक हों, और

(ख) हम आंदोलन चलाने, निर्वाचन अभियान चलाने, प्रतिशोध करने तथा छात्रों को परेशान करने आदि के ऐसे तरीके नहीं अपनाएंगे जो कि दूसरे व्यक्तियों के प्रति सद्भाव पूर्ण तथा सौजन्यपूर्ण होने और सभी के प्रति व्यवहार में सम्मानपूर्ण होने की भावना के विपरीत हो, और

(ग) हम ऐसी फिल्में नहीं देखेंगे या ऐसी पुस्तकें और पत्रिकायें नहीं पढ़ेंगे जो कि हिंसा और/या अशलीलता से भरी हो ।

२. हम नियमों तथा विनियमों, विधियों तथा आदेशों तथा उपचार संहिताओं के प्रयोजन को तथा उनकी उपयोगिता को स्वीकार करते हैं और हम उनके प्रवर्तन में कोई भी बाधा या रूकावट उत्पन्न नहीं करेंगे और न हम उनमें शिथिलता को या उनके उल्लंघन को प्रेरित या प्रोत्साहित करेंगें, बल्कि हम स्वयं उनका पालन करेंगे, और

(क) यदि कोई विधि, आदेश या आचार संहिता अविचारपूर्ण हो या लोकहित के प्रतिकूल हो या पर्याप्त : महत्वपूर्ण न हो तो हम उसका अध्ययन करेंगे और उसके प्रभावों तथा परिणामों का निर्धारण करेंगे तथा उसका उल्लंघन करने के बजाय पहले हम सुसंगत तथ्यों तथा विचारों को संबंधित प्राधिकारियों के सम्मुख प्रस्तुत करेंगे तथा उनसे अनुनय विनय करेंगे और उन्हें समय देंगें कि वे उसे संशोधित करें उसे वापस ले लें, उसे निरस्त करें, उसे रद्द करें या उसे प्रतिस्थापित करें ।

३. हम अपने सभी कार्यों तथा व्यवहारों में, जिनमें हमारे परीक्षण तथा हमारी परीक्षायें, हमारी खेल कूद तथा हमारी क्रीड़ाएं तथा और किसी भी अन्य व्यक्ति के कार्यों, विचारों या व्यक्तित्व के प्रति हमारी टीका-टिप्पणियां, हमारी आलोचना या हमारी सराहना सम्मिलित है, ईमानदार तथा निर्मल होगें ।

(क) यहाँ 'ईमानदार' तथा 'निर्मल' होने से तात्पर्य है अपने कार्य तथा रोजगार के प्रति निष्ठावान, सक्रिय, दक्ष तथा परिश्रमी होना तथा अपने अध्ययन में और अपने शैक्षिक या व्यावसायिक कार्यों में या अन्य किन्हीं भी क्रियाकलापों में हार्दिक लगन रखना ।

४. हम, ज्येष्ठ जनों के प्रति, जिनमें हमारे माता-पिता तथा शिक्षक भी सम्मिलित हैं, आदर भाव रखने के महत्व तथा लाभ को समझते हैं और इसलिये हम उनके प्रति निंदाजनक या अपमानपूर्ण वचन नहीं कहेंगे, बल्कि हम उनके प्रति सौजन्य पूर्ण तथा सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे, और

(क) यद्यपि हमें उनके विचारों से असहमत होने का और अपनी असहमति अभिव्यक्त करने का तथा उनसे चर्चा करने का अधिकार है तथापि हम उनके साथ के अपने सम्बन्धों में विनम्रता, शांति तथा धैर्य का परित्याग नहीं करेंगे, और

(ख) यदि हमें वस्तुत: या यथार्थत: कोई शिकायत हो या असहमति हो या अप्रवृत्ति हो तो हम उनके साथ शांति पूर्वक तत्संबंधी चर्चा करेंगे और यदि चर्चाओं से परिस्थिति में सुधार न हो सके तो हम ऐसे उपयुक्त रचनात्मक उपाय अपनायेगें, जो कि शांतिपूर्ण परिवेश का विनाश न करें, क्योंकि हम शांतिपूर्ण वातावरण को अपनी उन्नति और अपने विकास के लिए आवश्यक मानते हैं ।

(ग) हम, अपने शिक्षकों, संकाय-सदस्यों, कर्मचारियों या शासकीय कृत्यकारियों के किसी भी विचार, कार्य या वचनों के प्रति अपने असंतोष या अपनी असहमति को व्यक्त करने के लिए शासन की संपत्ति या किसी भी व्यक्ति की संपत्ति या शाला, महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय जैसी किसी भी संस्था की संपत्ति के प्रति बलपूर्ण, हिंसापूर्ण या विनाशक उपायों का सहारा नहीं लेगें, और

५. हम, किसी भी अन्य युवक या किसी भी अन्य व्यक्ति का मूल्यांकन उसकी श्रेणी, वेशभूषा, जाति, उप-जाति, राष्ट्रीयता आदि के आधार पर नहीं करेंगे और न हम किसी भी व्यक्ति के प्रति इस आधार पर भेदभाव पूर्ण व्यवहार करेंगे । कि वह हमारे समूह हमारे संगठन, हमारे पंथ, हमारी संस्कृति या हमारे धर्म का सदस्य अथवा अनुयायी है या नहीं है ।

६. हम, दहेज प्रथा या उससे मिलती जुलती किसी भी अन्य प्रथा को हमारे युग की भीषण बुराई मानते हैं और इसलिए हम दहेज लेने-देने के कार्य को या दहेज को प्रेरित अथवा प्रोत्साहित करने के कार्य को आत्म-सम्मान की भावना के प्रति तथा नारी की प्रतिष्ठा के प्रति शत्रुता पूर्ण मानते हैं और उसे नारी जाति का अपमान मानते हैं ।

७ हम सिवाय तब जब आपात की दशा में कोई चिकित्सक औषधि के रूप में हमें किसी भेषन (ड्रग) के सेवन की सलाह दे, अन्यथा किसी भी नशीले भेषज का या चेतना की अवस्था को परिवर्तित कर देने वाले भेषजों का सेवन नहीं करेंगे ।

(क) हम तंबाकू, अल्कोहल युक्त पेय पदार्थों या मारिजुआना आदि का सेवन नहीं करेंगे ।

८. हम युद्ध को एक बुराई मानेंगे और इसलिए हम आपात की दशा को छोड़कर तथा अपने देश की प्रतिरक्षा की दशा को छोड़कर अन्यथा सेना अथवा हथियार नहीं रखेगें और न सैनिकों की प्रशिक्षण देगें, और

(क) हम, परमाणु-युद्ध के संबंधित किसी भी अनुसंधान कार्य में, प्रशिक्षण कार्य में अन्य क्रियाकलापों में भाग नहीं लेगें ।

(ख) हम अपने अधिगम, अपनी शिक्षा अपने ज्ञान तथा अपनी उपलब्धियों का उपयोग जानते बूझते हुए युद्ध में हथियार तैयार करने के लिए या खाद्य पदार्थों के अपमिश्रण के तौर-तरीके ढूंढ निकालने के लिए परिवेश को विक्षुब्ध करने वाले या अन्य लोगों के चरित्र तथा स्वास्थ्य का विनाश करने वाले व्यवसाय या उद्योग की स्थापना करने के लिए नहीं करेंगे ।

(ग) हम, अपने अधिगम तथा ज्ञान का उपयोग समाज के संवर्धन तथा विकास एवं शांति तथा सुख के लिए तथा अंधविश्वास, विचार शून्य विश्वास, घृणा तथा शत्रुता के उन्मूलन के लिए तथा बेहतर आपसी समझ और मैत्री का वातावरण तैयार करने के लिए करेंगे ।

९. हम, राजनीति में सक्रिय भाग नहीं लेंगें या किसी महाविद्यालयों अथवा विश्व विद्यालय परिसर में समूहगत राजनीति में हिस्सा नहीं लेगें, और न हम राजनैतिक क्रियाकलापों में इस ढंग से भाग लेंगें कि जिससे शत्रुता, हिंसा या सामुदायिक मनमुटाव आदि पैदा होता हो या हो सकता है ।

तथापि, ऊपर जो कुछ कहा गया है उसका यह अर्थ नहीं है कि हम अपनी कक्षा में या अपने परिसर में राजनैतिक विषयों पर हमारे विषय के एक हिस्से के रूप में तुलनात्मक अध्ययन के प्रयोजनार्थ रचनात्मक ढंग से चर्चा नहीं कर सकेंगे, किन्तु हम उससे व्यक्तिगत या समूहगत कटुता पैदा नहीं होने देगें और न हम उसे विधि एवं व्यवस्था की समस्या बन्ने देगें या उग्र विवाद का रूप धारण करने देगें, जिससे कि वातावरण विषाक्त होता है या हो सकता है ।

१०. हमारा यह विश्वास है कि आत्मिक चेतना के उद्भूत उदात्त मानवता व्यक्तिगत रूपांतरण का भी और सामूहिक रूपांतरण का भी स्रोत और शक्ति है, जिसके द्वारा शरीर चेतना तथा पापों का विनाश होगा । ऊपर वर्णित हमारा आधार भूत सिद्धान्त तथा हमारा संघर्षक विश्वास इस अनुभूति से उत्पन्न है कि मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति से मानव जाति की भौतिक उन्नति होगी ।

अत: हम नैतिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा को हमारी शिक्षा का एक आवश्यक अंग मानते हैं और हम शांति प्रगति, वृद्धि तथा विकास के लिए नैतिक तथा मानवीय मूल्यों और सकारात्मक चिंतन को अपनाने के प्रयास करेंगे।

तनाव से मुक्ति

ब्र.कु. सूरज कुमार, माउण्ट आबू

रमेश—हैलो, सुरेश भाई, बड़े प्रसन्न चित्त नजर आ रहे हो, क्या कुछ मिल गया ?

सुरेश—क्या कुछ नहीं, मिल तो सब कुछ गया । परन्तु आप बताओ क्यों चेहरा सिकुड़ाए हुए हो ? क्या खो गया ?

रमेश—खोने की बात ही कहाँ . . . हमने पाया ही क्या है ? वही कमाना और खाना . . . बस यही जीवन हो गया है । और इसी छोटे से काम में दुनिया भर का तनाव . . . मन ऊबने लगा है, सुरेश भाई . . .

सुरेश—आपको कई बार तो कहा है, राज योगी बन जाओ . . . इन सभी तनावों से मुक्ति हो जाऐगी । परन्तु . . . आप हैं जो संसार के चक्करों में फँसते जाते हो । और फिर चिल्लाते हो कि हमें निकालो . . . ये भी कोई जीवन है क्या, कि कमाया, खाया और सो गये . . .

रमेश—तो क्या राजयोग जीवन को खुशहाल कर देगा ?

सुरेश—इसमें भी संशय है क्या . . . इसी के बल से तो हम तनाव से परे रहते हैं, और जीवन में परमानन्द प्राप्त करते हैं । इतना ही नहीं, सच कहूँ तो रमेश भाई, युगों तक जीने को मन चाहता है ।

रमेश—बड़े भाग्यवान हैं आप । मैं कभी कभी सोचता हूँ कि हमारे सुरेश जी, सदा इतने प्रसन्न क्यों रहते हैं आखिर इसका रहस्य क्या है ?

सुरेश—रहस्य है—भगवान के द्वारा सिखाया गया राजयोग । प्रभु की शरण लो . . . उसके बच्चे बन जाओ . . . बस जीवन खिल उठेगा ।

रमेश—तो बन्धुवर . . . यह तो बताओ कि राजयोग से तनाव कैसे दूर होगा । मैं आपके आश्रम पर कई दिन गया तो था, परन्तु मुझे कुछ समझ में नहीं आया ।

सुरेश—एक-दो दिन में कोई राजयोगी बनता है क्या ? कुछ समय लगातार अभ्यास करो । और प्रतिदिन ईश्वरीय महावाक्य सुनो, उनका मनन करो, तब आत्म-बल प्राप्त होगा और तनाव से मुक्ति होगी । क्योंकि तनाव का सबसे पहला कारण है 'कमजोर मन' । मन विकार-लिप्त होते होते इतना नीरस व निर्बल हो चुका है कि उसमें कोई भी बात का सामना करने की ताकत ही नहीं रही और समस्या आते ही वह तनाव-ग्रस्त हो जाता है ।

रमेश—हाँ यही होता है . . . कुछ भी बात आते ही तनाव बढ़ जाता है ।

सुरेश—योग से मन शक्तिशाली हो जाता है, जिससे उसमें स्थिरता आ जाती है । और कोई भी समस्या आने पर मन स्थिर रहकर, धैर्यचित्त होकर समस्या का समाधान कर लेता है । परन्तु कई मनुष्य समस्या आते ही अपसैट हो जाते हैं और सही समाधान न होने के कारण तनावयुक्त बने रहते हैं ।

रमेश—हाँ, मैं पूर्ण सहमत हूँ । यही होता है । परन्तु आप हमें कुछ ऐसी बातें भी बताइये, जिससे कोई समस्या आने पर, हम क्या सोचते हैं जो तनाव बढ़ जाता है और हम क्या सोचें जो तनाव मिट जाए ।

सुरेश—बड़ी सुन्दर बात पूछी आपने . . . लगता है आप भी कुछ प्रयोग करते हो ।

रमेश—हाँ मनोविज्ञान का कुछ अध्ययन होने के कारण मैं समझता हूँ कि तनाव-मुक्ति राजयोग से तो होगी ही, परन्तु चिन्तन का तरीका बदलना भी अति श्रेयकर होगा ।

सुरेश—बिल्कुल ठीक . . . यदि मनुष्य यह सीख ले कि अमुक बात आने पर इस तरह नहीं, बल्कि इस तरह सोचा जाए तो तनाव रहे ही नहीं ।

रमेश—तो आज हम कुछ ऐसी बातों पर चर्चा कर लें । मैंने देखा कि कोई भी बात जीवन में जब हमारे स्वमान या बहुत समय से चले आ रहे हमारे गौरव के विपरीत हो जाती है तो हम यह सोचकर तनाव ग्रस्त हो जाते हैं कि 'लोग क्या कहेंगे', 'दूसरे क्या सोचेंगे' ।

सुरेश—हाँ बड़ी ही स्वाभाविक सी व मानव प्रवृत्ति के अनुकूल बात है। प्रत्येक व्यक्ति यही सोच सकता है . . . परन्तु जरा ध्यान से देखें तो इसकी भेंट में यदि हम यह सोचें कि लोग जो कुछ कहेंगे—अब मुझे उस वातावरण को कैसे दूर करना है ! तो हमारा तनाव गहन चिन्तन में बदल जाएगा । क्योंकि यदि यह सोचकर कि लोग ऐसा कहेंगे, हम तनाव-ग्रस्त रहे तो हमारी भूलें बढ़ती रहेंगी और हमारे प्रति लोगों की भावनाएँ भी बदलती रहेंगी । अत: सार रूप में यों कहें कि कुछ भी हो जाने पर मनुष्य को उसके समाधान का ही चिन्तन करना चाहिए । क्योंकि जो कुछ हो गया, उसे हम बदल नहीं सकते ।

रमेश—हाँ . . . और कभी-कभी मनुष्य उधेड़ बुन में भी ज्यादा रहता है कि "यदि ऐसा न हुआ तो क्या होगा", "यदि ये हो गया तो

क्या होगा "—ये अनुमान भी तनाव के बीज बोते हैं ।

सुरेश—इस सम्बन्ध में स्वयं ज्ञान सागर ने हमें एक अत्यन्त ही रहस्यमयी बात बताई कि "ये विश्व-नाटक पूर्ण कल्याणकारी है" । श्रेष्ठ कर्म करते चलो, सब कुछ अच्छा ही होगा । इस रहस्य ने हमें पूर्ण तनाव-मुक्त कर दिया । यदि हम देखते हैं कि कहीं कुछ परिणाम अच्छा नहीं निकल रहा तो भी हम उसे कल्याण की दृष्टि से ही देखते हैं ।

रमेश—हाँ, देखा तो यही जाता है कि अन्ततः सब कुछ अच्छा ही होता है । हम यों ही व्यर्थ सोच-सोच कर परेशान रहते हैं ।

सुरेश—और हम राजयोगियों को एक और भी विश्वास रहता है कि "हम भगवान के बच्चे हैं" "सर्वशक्तिवान हमारे साथ है"— इसलिए कुछ भी अहित होगा ही नहीं । यह विश्वास हमें तनाव-मुक्त रखता है ।

रमेश—इस बात की तो कोई तुलना ही नहीं है । कभी कभी बीमारियाँ व उसमें धन का अभाव भी मन में बहुत तनाव पैदा करता है । बीमारियाँ ऐसा वार करती हैं जो मनुष्य स्वयं को चारों ओर से घिरा-घिरा महसूस करता है । उसमें भी धन का अभाव अवश्य ही चिन्तित कर देता है ।

सुरेश—जब भी शारीरिक बीमारियाँ आती हैं तो हमें यह ईश्वरीय ज्ञान बड़ी मदद करता है । हम सोचते हैं कि बीमारी तो देह को है, मुझे तो नहीं तो मैं परेशान क्यों रहूँ । और परिवार वालों की बीमारी में भी हम बड़ी ही धैर्यता से काम लेते हैं । क्योंकि मन की परेशानी से तो बीमारी बढ़ेगी ही, ठीक तो नहीं होगी ।

रमेश—हाँ उस समय तो मन और भी चिड़चिड़ा हो जाता है, जब कोई भी हमारी सेवा नहीं करता ।

सुरेश—परन्तु देखा तो यह गया कि अगर हम बीमारी को हल्का समझें कि "यह कुछ नहीं है" "आज आई है कल चली जाएगी" तो मन सदा प्रसन्न रहेगा और दूसरे मनुष्य खुशी से सेवा भी करेंगे । वास्तवमें मनुष्य का चिड़चिड़ापन दूसरों के मन के सेवाभाव को कम कर देता है ।

रमेश—हाँ, यह बात तो ठीक है, परन्तु जब बीमारी बहुत लम्बे समय तक चलती है तो अनेकानेक जिम्मेदारियों का बोझ मन में तनाव ला देता है । जैसे बच्चों का क्या होगा, परिवार कैसे चलेगा ? आदि २ ।

सुरेश—हाँ, परन्तु तनाव तो मनुष्य को सुखायेगा ही । इस सन्दर्भ में हमें कर्मों की गति का ज्ञान तनाव-मुक्त रखता है ।

प्रत्येक मनुष्य द्वारा किये गये कर्म उसके साथ हैं । हम देखते हैं कहीं कहीं मां-बाप की पूरी पालना मिलने हुए भी बच्चे अयोग्य व अवारा हो जाते हैं और कहीं कहीं माता-पिता के बच्चों की अल्पायु में ही विदा हो जाने पर भी बच्चे बड़े योग्य व कुल-दीपक हो जाते हैं । अतः यह सोचना कि बच्चों का व परिवार का मैं ही जिम्मेदार हूँ - तनाव पैदा करता है । परन्तु सोचना यह चाहिए कि सब भगवान के बच्चे हैं, वही सबका पालनहार है . . . यहाँ तक कि मेरा भी मेरे न होने पर भी सबकी पालना होगी ही . . . इस तरह का चिन्तन हमें जिम्मेदारियाँ अदा करते हुए भी प्रसन्न चित्त रक्खेगा ।

रमेश - हाँ बात तो ठीक है । सचमुच भगवान सबका रक्षक व परमपिता होते हुए भी पूर्ण निश्चिन्त है . . . और हम केवल ४ बच्चों के संरक्षक होने पर ही चिन्तित . . .

सुरेश - रही बात धन के अभाव की । भगवान के बच्चे बनने के बाद ये समस्या भी नहीं रहती । सोचो भला दाता के बच्चों को अभाव क्यों होगा ? कोई न कोई साधन उनकी धन-पूर्ति करता ही रहेगा । अतः स्वयं को पूर्णतया प्रभु-समर्पण कर देने पर कुछ भी तनाव नहीं रहता । वास्तव में ये मेरा मेरा ही तनाव लाता है । और सब कुछ प्रभु का है— यह भाव हमें तनाव-मुक्त करता है ।

रमेश - ये तो बड़ी ही गहरी बातें हैं । अगर मनुष्य इन्हें अपना ले तो चिन्ता हो ही नहीं । और अब कुछ और बातें . . . मनुष्य का जब अपमान होता है या उसे समय पर सहयोग नहीं मिलता तो भी तनाव बढ़ जाता है ।

सुरेश - इसका हल ये ईश्वरीय महावाक्य है कि "स्वमान में रहने वाले का कभी भी अपमान नहीं होता ।" परन्तु यदि कोई अपमान करे भी तो हमें अपने दृष्टि कोण को बदलने की आवश्यकता है । हम कई बार छोटी सी बात को विशाल रूप में ले लेते हैं और व्यर्थ सोच सोच कर तनाव बढ़ा लेते हैं । तो हम प्रत्येक घटना को सरल रूप दें या हम याद रक्खें - "Nothing New" – अर्थात वही हो रहा है जो अनेक बार हुआ है ।

और ऐसे ही योगी को सर्व का सहयोग भी स्वतः ही मिलता है । क्योंकि योगी का सहयोगी स्वयं भगवान होता है । और जिसे भगवान का सहयोग प्राप्त हो, उसे कठिनाई क्या । परन्तु फिर भी यदि आवश्यकता में सहयोग न मिले तो मनुष्य को अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर, शान्त मन से कार्य करना चाहिए । अधिक सहयोग की कामना नहीं करनी चाहिए । क्योंकि यह कामना भी तनाव बढ़ाती है ।

रमेश - और ऐसे ही बच्चे पढ़ते नहीं, सुधरते नहीं - यह बात भी माँ-बाप के मन में चिन्ता का विषय बनी रहती है ।

सुरेश - शिक्षा क्षेत्र में वर्तमान वातावरण को देखते हुए व भौतिक चकांचौंध बढ़ते हुए, बच्चों का शिक्षा के प्रति रूखापन स्वाभाविक सा होता जा रहा है । ऐसे में माँ-बाप को बच्चों के प्रति अपने कर्त्तव्य को पूर्ण रूपेण निभाना चाहिए । परन्तु हमारी चिन्ता उनके सुधार में कुछ भी भूमिका नहीं निभायेगी । अतः इस सम्बन्ध में निश्चिन्त होकर उनके सुधार के प्रयत्न करें ।

रमेश - ऐसे तो तनाव के अनेक आधार हैं । समय का अभाव, सम्बन्धों में एक-दो के प्रति विश्वास की कमी, साथियों व बच्चों का आज्ञा न मानना– ये सभी तनाव के कारण है । वैसे तो प्रत्येक मनुष्य के तनाव के कारण अलग अलग भी होते हैं । पर अब कुछ ऐसी बातें बनाइये जिसमें प्रत्येक परिस्थिति में तनाव-मुक्त रहा जा सके ।

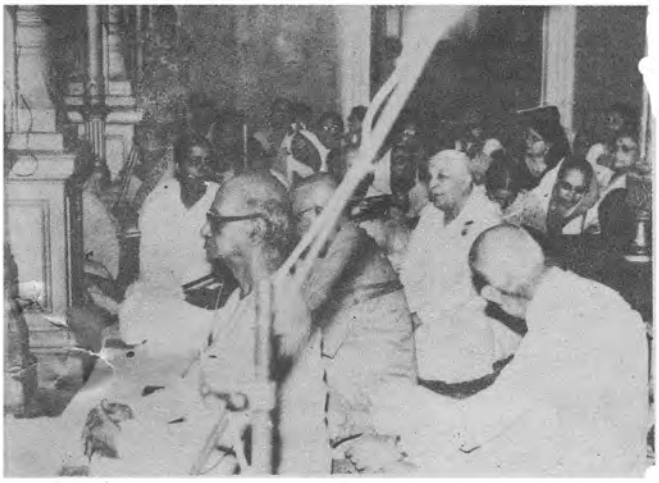

कलकत्ता - रामकृष्ण परमहंस के १०० वर्ष के उपलक्ष में आयोजित धर्म सभा मे दीदी निर्मल शान्ता परमपिता परमात्मा शिव का सन्देश देते हुए ।

दादा जे.पी. वासवानी जी के लन्दन पधारने पर उन्होंने ब्र.कु. ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित शान्ति सम्मेलन में भाग लिया । वे लन्दन में ब्र. कु. जानकी जी के साथ विराजमान हैं ।

फिजी में, ब्र.कु. भावना प्रसिद्ध सन्यासी भास्करानन्द जी को ईश्वरीय सन्देश देते हुए ।

स्वामी धर्मानन्द जी अध्यक्ष परमार्थ आश्रम हरिद्वार को ब्र.कु. प्रेमलता राखी बाँधने के बाद टोली दे रही हैं साथ में ब्र.कु. अनिता खड़ी हैं ।

भारतीय राष्ट्रीय मंच के संस्थापक स्वामी पूर्ण स्वतन्त्र जी को ब्र.कु. शील नई दिल्ली में उन्हें पावन राखी बांधते हुए ।

रक्षा बन्धन कार्यक्रम में ब्र.कु. उषा बन्नु बिरादरी के धार्मिक नेता भ्राता के.एल खटक जी को राखी बांध रही हैं ।

सेवा समाचार (चित्रों में)

राखी के अवसर पर आयोजित विशेष समारोह पर दीदी निर्मल शान्ता जी प्रवचन करते हुए साथ में मुख्य अतिथि है फादर पी. फालो (क्रिस्चियन प्रिस्ट) साथ में कानन बहन ।

दिल्ली के आर्कबिशप ऐन्जैलो फरनानडैस को पहाड़गंज की ब्र.कु. शील पवित्रता की सूचक राखी बांधते हुए ।

मोदी नगर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर मोदीनगर के राजयोग भवन में त्रि-दिवसीय गीता रहस्य आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रही है बहन गिन्नी देवी मोदी, धर्मपत्नि सेठ केदार नाथ मोदी । साथ में ब्र.कु. विनोद।

अमृतसर में चरित्र निर्माण संग्रहालय का अवलोकन करते हुए भ्राता ओ.पी. बहल तथा श्रीमति बहल जी । ब्र.कु. आदर्श उन्हें चित्रों की व्याख्या करते हुए ।

ब्र.कु. मनोहरइन्द्रा जी पाटन में एक विशाल सभा में सम्बोधन करते हुए ।
साथ में सर्वमंगलम आश्रम के स्थापक बैठे है ।

अहमदाबाद में भ्राता क.क. शास्त्री अध्यक्ष विश्व हिन्दु परिषद ज्ञान चर्चा के पश्चात अपने विचार लिख रहे है ।

सहारनपुर में ब्र.कु. प्रकाशइन्द्रा जी. सिटी मैजिस्ट्रेट भ्राता चन्द्रिका प्रसाद तिवाडी को पवित्रता की सूचक राखी बांधते हुए ।

कैदियों को ईश्वरीय संदेश

रायपुर स्थित केन्द्रीय कारागार में आयोजित रक्षा बन्धन के अवसर पर ब्र.कु. कमला एक कैदी को आत्म स्मृति का तिलक लगा रही है ।

सोलन जेल में कैदियों को राखी बांधते हुए ।
ब्र.कु. सुष्मा तथा पुष्पा बहन ।

खेखडा (पूना) मध्यवर्ती जेल में कैदियों के समक्ष रक्षाबंधन का महत्व स्पष्ट करते हुए
ब्र.कु. उर्मिला ।

बांदा जेल में ब्र.कु. दुलारी, सरिता, मुन्नी जी ने सात सौ कैदियों को राखी बाँधी ।

सोलापुर जेल में कैदियों के समक्ष ब्र.कु. प्रमिला राखी का महत्व समझाते हुए ईश्वरीय सन्देश दे रही है

उदयपुर जेल में कैदियों को राखी बांधती हुई ब्र.कु.शील बहन।

बस्ती कारागार में ब्र.कु. दमयन्ती जेलर भ्राता ओ.पी. बोहरे को राखी बांधने के पश्चात् साहत्य भेंट करते हुए।

मेहसाना जेल में क़ैदियों के समक्ष रक्षा बन्धन के कार्यक्रम के अवसर पर सामने बैठी हैं ब्र.कु. गौरी, नूतन, मधु बहन ।

लखनऊ के आदर्श जेल में आजीवन बन्दी भाईयों को राखी बांधते हुए ब्र.कु. माधुरी जी ।

भावनगर में बैंक आफ सौराष्ट्र के प्रबंधक निदेशक बी.के. घोष को ब्र.कु. गीता पावन राखी बांधते हुए ।

ज़हादा में कैदियों को ब्र.कु. विद्या राखी बांधते हुए ।

मोडासा में ब्र.कु. ज्योति, ईला, शीला कैदियो को पवित्रता की सूचक राखी बांधते हुए ।

मूक-बधिर विद्यालय के बच्चों को फतेहगढ़ में ब्र.कु. सुमन बहिन राखी बांध रही है ।

महुवा में नए मकान के उद्घाटन समारोह में ब्र.कु.सरला बहन सम्बोधन करते हुए।

उन्नति के पथ पर

ले. ब्रहमाकुमारी सुधा, शक्तिनगर, दिल्ली

हरेक आध्यात्मिक पुरुषार्थी अपने जीवन में सतत उन्नति तो चाहता ही है। परन्तु देखा गया है कि पुरुषार्थ के पथ पर चलते-चलते कभी-कभी गति रुक भी जाती है और यदि गति हो भी तो प्रगति नहीं होती। जीवन में ऐसा लगता है कि उन्नति रुक गई है। अवनति का अनुभव भी नहीं होता परन्तु हम उन्नति के शिखर की ओर बढ़ते जा रहे हैं, ऐसा भी प्रतीत नहीं होता। एक ओर जब हम परमपिता शिव परमात्मा के ये महावाक्य सुनते हैं कि अब 'उड़ती कला' होनी चाहिए और दूसरी ओर हम देखते हैं कि जीवन में इतनी तीव्र गति से तो प्रगति हो नहीं रही, तब प्रश्न उठता है कि अवश्य ही कुछ ऐसे कारण उपस्थित हो गए हैं जो कि वाञ्छित उन्नति नहीं होने देते। यह ठीक है कि जीवन में पवित्रता होती है, हम प्रतिदिन क्लास भी करते हैं, हमारी वृत्तियाँ संसार की ओर भी नहीं जाती और हम स्वयं को ईश्वरीय परिवार का ही समझते और अनुभव करते हैं परन्तु दिनोंदिन हमारी योग की स्थिति अधिकाधिक उच्च होती जाए, हम विदेह और अव्यक्त बनने के पुरूषार्थ पथ पर दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करते रहें और हर आध्यात्मिक विषय में सन्तोषजनक विकास का अनुभव करें – ऐसा भी नहीं होता। कोई पुरूषार्थी यह कहता है कि मुझमें प्रारंभ में तो एकाएक परिवर्तन हुआ और अच्छे-अच्छे आध्यात्मिक अनुभव भी हुए परन्तु अब कुछ समय से ऐसा लगता है कि आध्यात्मिक जीवन रूक सा गया है। इससे एक नीरसता का अनुभव होता है। इच्छा और उमंग में वह पहले – जैसा वेग नहीं रहा और एक ढीलापन-सा लगता है। प्रश्न उठता है कि जब ऐसी स्थिति हो जाए तब क्या किया जाए?

वास्तव में देखा जाए तो शिव बाबा ने इस बात पर काफी स्पष्टतः से प्रकाश डाला है और इसके लिए अनमोल और श्रेष्ठ युक्तियाँ भी सुझाई हैं। उस खजाने में से हम इस लघु लेख में कुछ थोड़ी ही युक्तियों की चर्चा करेंगे और उनसे प्रेरणा लेकर उन्नति के पथ पर अग्रसर होते जायेंगे।

आत्म-निरीक्षण अथवा पड़ताल

सबसे पहली बात तो यह है कि हमें अपने भीतर में टटोलना चाहिए कि उन्नति न होने का कारण क्या है। हम प्रायः शारीरिक स्वास्थ्य और विकास के क्षेत्र में भी देखते हैं कि जब किसी व्यक्ति को औषधि ठीक दी जाती है और उसे भोजन इत्यादि भी ठीक मिलता है तब फिर वह स्वस्थ, सुदृढ़ और बलशाली क्यों नहीं हो रहा? डाक्टर को सोचना पड़ जाता है कि स्वास्थ्य के पथ पर इसकी उन्नति क्यों नहीं हो रही। ठीक इसी प्रकार हमें भी सोचना चाहिए कि हम ईश्वरीय ज्ञान भी प्राप्त करते हैं, योग भी लगाते हैं, सेवा-क्षेत्र में तो लगे रहते ही हैं, तब भी अधिकाधिक उन्नति क्यों नहीं हो रही? बाबा ने हमें मास्टर सर्जन अथवा मास्टर वैद्य तो बना ही दिया है और औषधि-उपचार भी सिखा दिया है। अतः हमें अपनी चैकिंग, अपना आत्म-निरीक्षण करना चाहिए। जैसे कोई व्यापारी व्यापार में वृद्धि न होने पर अपने हिसाब-किताब की जाँच-पड़ताल करता है और तरक्की का कोई साधन निकालता है, वैसे ही हमें भी अपनी रूहानी कमाई को बढ़ाने के लिए, अपने व्यवहार-ब्योरे पर दृष्टि डालकर उन्नति का मार्ग निकालना चाहिए। जब हम चेकिंग करना छोड़ देते हैं तब हम वास्तव में पहली भूल करते हैं जिससे कोई-न-कोई ऐसी बात हमारे जीवन में आ जाती है जो दीवार या रुकावट की तरह रोकने का काम करती है। अब प्रश्न उठता है कि चेकिंग किस बात की करें?

वास्वत में जैसे विशिष्ट व्यक्ति (IP's) अथवा अति विशिष्ट व्यक्ति (VIP's) कुछ-कुछ समय के बाद अपने शरीर की पूरी चेकिंग कराते हैं, वैसे ही जो विशेष पुरुषार्थ करना चाहते हैं और महानता की विशेष ऊँचाई प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें भी हर थोड़े दिनों के बाद अपनी जीवन-झांकी की छवि को देखना और संवारना चाहिए अथवा किसी भी प्रकार की ढील और अलबेलेपन को जो जाने-अनजाने जीवन में आ गये हों, अब ढूँढ कर निकाल देना चाहिए।

1. समय और आदेशानुसार कर्त्तव्य पालन

एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि बाबा जिस समय जो कार्य करने के लिए कहते हैं, उनके उस कथन में कार्य के महत्त्व के अतिरिक्त समय का भी महत्त्व होता है। उदाहरण के तौर पर यदि बाबा कहते हैं कि प्रातः 4 बजे योग का अभ्यास करो अथवा याद की यात्रा करो तो उसमें महत्त्व योग का भी है और साथ-साथ समय का भी। यूँ तो योग किसी समय भी हो सकता है और बाबा ने कहा भी है कि हमें अधिक-से-अधिक समय अथवा निरन्तर योग में रहने का पुरुषार्थ करना चाहिए। परन्तु विशेष पुरुषार्थ के लिए बाबा ने 4बजे अमृत वेले का समय भी बताया है। कहा भी गया है कि समय पर ही तरुवर फल देते हैं, समय पर ही नदियाँ पानी देती हैं और समय पर ही

खेत में बीजारोपण करना होता है। अतः जिस समय बाबा जो पुरुषार्थ अथवा जो सेवा करने के लिए कहते हैं, उसी समय उसे कर देने से ही कल्याण अथवा विशेष सफलता की प्राप्ति होती है। उस समय उस कार्य को न करके बाद में करने का महत्त्व आधे से भी कम हो जाता है और उसमें अवज्ञा तो हो ही जाती है। अतः उन्नति न होने का एक कारण बाबा द्वारा बताये हुए समय और सुझाव का पालन न करके अपनी ही मतानुसार उस सुझाव को बदलकर गोया अपनी तकदीर को बदलना है।

2. दिनचर्या का महत्त्व

यों तो पुरुषार्थ के बारे में बाबा द्वारा बताइ गई सभी बातें आवश्यक हैं परन्तु उनमें से भी दिनचर्या को विशेष तौर पर ठीक रीति चलाना विशेष महत्त्व रखता है। किसी ने ठीक कहा है कि आप मुझे किसी व्यक्ति की दिनचर्या बताओ और मैं आपको बताऊँगा कि वह कैसा व्यक्ति है। दिनचर्या ही मनुष्य को आगे बढ़ाती और दिनचर्या ही पतन लाती है। इसलिए दिनचर्या पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है। बाबा ने कहा है कि जैसे विशिष्ट व्यक्तियों के मिनट-मिनट का प्रोग्राम बना होता है, वैसे ही आप लोगों को भी उत्तम दिनचर्या के अनुसार चलना चाहिए। अपनी दिनचर्या के अनुसार यदि हम बार-बार योगाभ्यास करेंगे, ज्ञान को सुनेंगे, मनन करेंगे और दूसरों को सुनायेंगे तो उन्नति न होने का प्रश्न ही नहीं उठ सकता। हमारी दिनचर्या में व्यर्थ होगा ही नहीं और इसलिए हम निश्चय ही समर्थ बनते जायेंगे। डॉक्टर भी जब किसी को औषधि देते हैं तो बताते हैं कि दिन में इतनी बार दवाई खाना, इतना विश्राम करना आदि-आदि, ऐसे ही आध्यात्मिक पुरुषार्थ में भी समय-पालन, नियम-पालन और दिनचर्या-पालन का भी महत्त्व है।

3. विद्यार्थी जीवन

आध्यात्मिक मार्ग पर चलते-चलते कई बार मनुष्य स्पष्ट या अस्पष्ट रुप से यह समझने लगता है कि मैं तो ज्ञान से भली-भांति परिचित हूँ ही, योग का भी मैंने काफी अभ्यास किया है इत्यादि-इत्यादि। इन तथा अन्य किन्हीं कारणों से विद्यार्थी के जैसा जीवन नहीं रहता। इसका परिणाम यह होता है कि ज्ञान, योग, धारणा, सेवा की गति दिनों दिन तीव्र होने की बजाय मन्द पड़ने लगती है। अतः हमें यह सदा याद रखना चाहिए कि हम सर्व प्रथम विद्यार्थी हैं और आध्यात्मिक विद्या के चारों विषयों का नित्य अध्ययन हमारा विशेष कर्त्तव्य है। विद्यार्थी जीवन के बिना प्रगति निश्चय ही मन्द पड़ जाएगी। विद्या-धन ही हमारी कमाई है और बेस्ट (Best: श्रेष्ठ) बनने के लिए गॉडली स्टुडेन्ट लाइफ इज द बेस्ट -- ईश्वरीय पढ़ाई ही अधिकाधिक ऊँचाई पर जाने का श्रेष्ठ मार्ग है।

अगर हम इन तीन बातों की चेकिंग करेंगे तो तीनों लोकों मे जो-कुछ भी सर्वोत्तम है, उसकी प्राप्ति हमें हो जाएगी। हम तीन कदमों में त्रिलोकी को माप लेंगे।

जबलपुर के जिलाध्यक्ष भ्राता भागीरथ प्रसाद जी को ब्र.कु. सरोज राखी बांध रही हैं ।

बिलासपुर में ब्र.कु. ममता अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश भ्राता पी.एल. राठौर जी को

फतेहपुर के जिला अधिकारी भ्राता जे.पी. जोशी को राखी बांधते हुए ब्र.कु. दुलारी जी ।

ब्र.कु.अमृता बहन भ्राता के.एस.मणी जिलाधीश को राखी बांधते हुए।

फिरोजपुर में आयुक्त चौधरी हरिराम को राखी बांधते हुए ब्र.कु. तृप्ता बहन ।

फीरोजपुर शहर में ब्र.कु. सरमिष्टा सी.एम.ओ. डॉ मनमोहन कौर को राखी बांधने हुए ।

ऊना के डिप्टी कमिश्नर भ्राता एस. पदमनाभन जी. को ब्र.कु. बीना राखी बांधते

सतना सेवा केन्द्र की इन्चार्ज ब्र.कु. निर्मला जी इन्कम टैक्स आफीसर तिवारी जी को रक्षा सूत्र बांधा । चित्र में नगर के प्रमुख सेठ अर्जुन दास जी भी बैठे हैं ।

दिल्ली नगर निगम के कमिश्नर भ्राता जी वास्तव जी को ब्र.कु. चक्रधारी राखी बांधते हुए । ब्र.कु. सुधा साथ में हैं ।

आर्मी में ब्र.कु. अरुणा आमदार शिवचरण जी को राखी बांधते हुए ।

कुल्लू-पंजाब नेशनल बैंक के एल.बी.ओ. भ्राता कौशल जी को ब्र.कु. किरण पवित्रता की सूचक राखी बांध रही हैं ।

एल.टी.डी. फैक्ट्री के मैनेजर भ्राता कुलवन्त सिंह जी तथा इन्जीनियर राखी बंधवाने के पश्चात ब्र.कु. बहिनों के साथ खड़े हैं ।

फिजी के प्रसिद्ध इन्जीनियर शंभू भाई को राखी बांधती हुई ब्र.कु. भावना जी ।

जबलपुर मंडल रेल प्रबन्धक भ्राता वी. विश्वनाथन को ब्र.कु. रेखा राखी बांध रही है ।

मोहाली, चन्डीगढ़ में ब्र.कु. हरजीत भ्राता के.एस. प्रेम, निर्देशक सिंचाई विभाग पंजाब को राखी बांध रही है ।

गोरखा में ब्र.कु. इन्द्रा जे.जी. गुप्ता एम ई आल इन्डिया रेडियो को राखी बांधते हुए ।

इलाहाबाद नगर महापालिका के सचिव भ्राता दुबे जी को ब्र.कु. मनोरमा राखी बांध रही है ।

रोपड़ में उपायुक्त भ्राता एम.एस. केले को ब्र.कु. राज स्नेह सचक राखी बांधते हुए ।

दमोह में रक्षा बन्धन के कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए जिलाध्यक्ष भ्राता पदमवीर सिंह जी साथ में जिला एवं न्यायाधीश भ्राता वही. जी वराड़ पांडे व ब्र.कु. बहनें बैठी हैं ।

बिलास पुर के कमिश्नर भ्राता आर. सी. श्रीवास्तव जी को ब्र.कु. गीता बहिन राखी बांधते हुए

होसपेट सेवाकेन्द्र पर रक्षाबन्धन कार्यक्रम क अवसर पर उपस्थित अतिथियों को राखी बांधी गई ।

ब्र.कु. सुमन दुर्ग के जिलाधीश भ्राता एस.पा. दुबे जी को राखी बांधने के पश्चात आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ।

झज्जर में सब डिविजन मजिस्ट्रेट भ्रा राजपाल सिंह जी को राखी बांधने के पश्च उनके साथ ब्र.कु. लता जी खड़ी है ।

यवतमाल सेवा केन्द्र में ब्र.कु. मंगला बहन यवतमाल के उप जिलाधीश भ्राता मोगे जी को राखी बांधते हुए ।

हिंगणघाट में ब्र.कु. जयमाला उपविभागीय अधिक भ्राता र.दे. जहागिरदार को राखी बांधते हुए ।

जालौर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करने पश्चात् पुलिस अधीक्षक भ्राता महेश्वरी जी चित्रों की व्याख्या सुनते ।

छतरपुर रक्षा बंधन पर्व पर ब्र.कु. पचशीला जिलाधीश एम.के. राय को ल.ना. का चित्र उपहार देते हुए साथ में ब्र.कु. सविता जी ।

भाव नगर में "व्यवस्था विज्ञान और शान्ति पूर्ण व्यवस्था" के विषय पर रखे गये सम्मेलन को उदबोधित कर रही हैं ब्र.कु. रतन मोहिनी जी

फिल्लौर में सिविल हास्पिटल के एस.एम.ओ. सिन्धू जी को राखी बांधने के पश्चात भाई-बहनों का एक ग्रुप ।

जबलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति भ्राता अमरीश अवस्थी को ब्र.कु. रेखा राखी बांध रही है ।

फिलौर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उदघाटन सरपंच भ्राता विश्वामित्र जी कर रहे हैं ।

धर्मशाला में ब्र.कु. उमा, आर्शा स्वरूप. सैटलमैन्ट आफीसर को राखी बांधते हुए ।

डिब्रूगढ़ में जालान नगर स्थित राधे कृष्ण मन्दिर में ब्र.कु. ई.वि. विद्यालय द्वारा प्रस्तुत राधे कृष्ण की झांकी का दृश्य ।

शाहदरा में स्नेह मिलन के अवसर पर ब्रह्मा भोजन का दृश्य ।

खलीकोट (उड़ीसा) गीतापाठशाला के प्रथम वार्षिकोत्सव पर प्रवचन करती हुई ब्र.कु. नीलम जी ।

रुड़की के डी.एम. भ्राता राकेश शर्मा को ब्र.कु. बिमला राखी बांधते हुए ।

जबलपुर रोटरी क्लब में ब्र.कु. किरण बहन "राजयोग" पर प्रवचन करती हुई ।

सूक्ष्म ईश्वरीय सेवाएं और राजयोग विद्यापीठ

— ब्रह्माकुमार रमेश, गामदेवी बंबई

ईश्वरीय सेवा अर्थ शिवबाबा ने अनेक साधन हम बच्चों को दिये हैं । साधनों के साथ-साथ साधना भी ज़रूरी है क्योंकि साधन और साधना दोनों के समन्वय से स्व की उन्नति हो सकती है और साथ २ औरों को भी उन्नति में मदद कर सकते हैं । साधनों के द्वारा, हम इस धरा पर अवतरित परमपिता परमात्मा का संदेश, विविध रूप से सबको देते हैं । इन विविध साधनों के प्रयोग से हमारे अनेक बहन-भाईयों ने प्यारे शिवबाबा को तथा इस अविनाशी रुद्र ज्ञान यज्ञ को पहचाना है । सभी साधनों की साधना ने परोक्ष और अपरोक्ष रूप में सुंदर फल दिया है ।

हरेक साधन का रूप तथा परिणाम अपना २ है । जैसे एक ज़माने में सफर पैदल चलकर किया जाता था, बाद में साइकल, ट्रेन, मोटर, हवाई-जहाज़ और रॉकेट के भी प्रयोग हुए । इस प्रकार विशेष प्रयोग के आधार पर समय तथा साधना का परिश्रम कम होता गया । एक जमाने में ८० दिन में विश्व की परिक्रमा करना बहुत बड़ी चीज़ मानी जाती थी, आज रॉकेट के ज़माने में ८० मिनटों में पृथ्वी की परिक्रमा हो सकती है । एक ज़माने में लोग समाचार जानने हेतु समाचार-पत्र पढ़ते थे, विज्ञान ने तरक्की की और रेडियो बनाया । आज लोग रेडियो द्वारा समाचार सुनते हैं अर्थात समाचार के शब्दों का श्राव्य के रूप में रूपांतर हुआ । विज्ञान ने और तरक्की कर टेलीविजन बनाया जिससे शब्दों के साथ, समाचार में, दृश्य का भी साक्षात्कार लोगों को होने लगा और उसी से परिणाम में भी फर्क होने लगा ।

ईश्वरीय सेवा के अंतर्गत प्रदर्शनी, मेला, भाषण, नाटक इत्यादि स्थूल साधन हैं और अब तक हमने विशेष रूप से इन्हीं साधनों के प्रयोग किये हैं । पहिले सेवा का मुख्य लक्ष्य ज्ञान का संदेश देना था, बाद में दूसरों को सुख देने का बना और अभी एक संदेश में प्यारे शिवबाबा ने बताया है कि अब सेवा का लक्ष्य है अनुभव करना और कराना । इस विश्व विद्यालय की स्थापना के समय, आदि में साक्षात्कार आदि की बहुत मदद थी और अंत में वही साक्षात्कार का पार्ट होने वाला है । इसीलिये शिवबाबा ने संदेश में कहा कि बच्चे एक की याद रूपी एकांत में रहकर के अनेक अनुभव करो और अनेकों को अनुभव कराओ और साक्षात्कार मूर्त बनो नहीं तो फिर ऐसे साक्षात्कार मूर्त बच्चों को देखने वाले बनना पड़ेगा ।

ज्ञान और योग के द्वारा सेवा करके औरों को सुख देने का अनुभव का ख्याल या ज्ञान मुझे तब हुआ जब बंबई में हमारे अति लाडले दैवी भ्राता विश्व किशोर जी का ऑपरेशन हुआ था । उन्हें ऑपरेशन के कारण रात को नींद नहीं आती थी । विश्व किशोर दादा की तबियत के समाचार की लेनदेन रोज कुमारका दादी मधुबन में साकार ब्रह्मा बाबा से करती थी । उसमें एक दिन उनके अनिंद्रा के समाचार की लेन देन हुई । दूसरे दिन ब्रह्मा बाबा ने कुमारका दादी को फोन पर सवाल पूछा कि क्या कल रात्रि को बच्चे को अच्छी नींद आई ? दादी ने कहा हां, कल रात्रि को भ्राता को अच्छी नींद आई । बाद में मालूम पड़ा कि उस रात्रि को ब्रह्मा बाबा ने सारी रात्रि जाग करके योगदान द्वारा विश्वकिशोर भाई को नींद रूपी सुख का, उस बीमारी में दान दिया या अनुभूति कराई ।

बाद में जब हम १९७१ में ईश्वरीय सेवाअर्थ विदेश यात्रा पर जा रहे थे तब अव्यक्त बापदादा ने हम बच्चों को एक विशेष सूचना दी थी कि हम जब भी विदेश यात्रा में ईश्वरीय सेवा अर्थ किसी व्यक्ति को मिलने या कोई कार्य करने निकलें तो अपने स्थान से निकलने के पहिले हम जरूर ५ मिनिट बाबा की याद में बैठकर उस व्यक्ति या कार्य के प्रति योगदान दें । जिस प्रकार एक किसान बीज बोने से पहिले, कलराठी ज़मीन को, हल चला करके बीजग्रहण करने लायक बनाता है उसी प्रकार ज्ञान रूपी बीज को, कार्य को सिद्ध करने के लिए, योगामृत की शक्ति द्वारा, उस व्यक्ति को ज्ञान के बीज को धारण करने लायक बनाना चाहिये । योगबल की शक्ति से कार्य सरल और सहज होता है । आबू में जब अपना 'ओमशांति' भवन बनता था तब अनेक प्रकार के विघ्न आते थे । उस विघ्न को दूर करने के लिए तथा कार्य को सफल करने के लिए योग की भट्टी रूपी सूक्ष्म साधन अनेक बार अपनाये गये । उस विदेशयात्रा में भी ५ मिनिट की सूक्ष्म साधना के कारण बाद

में स्थूल साधना बहुत ही सफल निकलती थी और उसी के परिणाम स्वरूप विदेश सेवा का कार्य शुरू हुआ अर्थात् बाबा ने हम बच्चों को उस सफर में सूक्ष्म सेवा तथा स्थूल सेवा का अद्भुत संतुलन (Balance) तथा सहयोग सिखाया ।

मधुबन में एक बार मुख्य भाई-बहनों की भट्टी थी । भट्टी के तीसरे दिन अव्यक्त बापदादा की पधरामणि हुई और सुंदर मुरली रूपी ज्ञान वर्षा भी हुई । बाद में अव्यक्त बापदादा हरेक से व्यक्तिगत मिलने लगे । जब मेरा टर्न आया तब मुझे बाबा ने पूछा, 'बच्चे, क्या चाहिये ?' एक सेकंड में मुझे निर्णय करना था । मैंने कहा बाबा, आप आनंद के सागर हैं, तो आपसे डायरेक्ट अभी योग करके उसी आनंद की शक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव करना है । बाबा ने कहा, 'ठीक है सामने बैठ जाओ ।' अव्यक्त बापदादा की डायरेक्ट दृष्टि मिलने लगी और आनंद की लहरें उस आनंद के सागर से लहराती हुई मेरे दिल, दिमाग, मन, बुद्धि आदि तक पहुंचने लगी, आनंद के लहरों की मात्रा तथा शक्ति और गहराई बढ़ने लगी । आनंद के सागर द्वारा मैं अतींद्रिय आनंद के अनुभव में खो गया । १०-१५ मिनिट के बाद उन लहरों की मात्रा और शक्ति कम होती गई । अंत में बाबा ने कहा कि जैसे अभी बच्चे ने आनंद की शक्ति का अनुभव किया वैसे ही बच्चे, औरों को भी चन्द्रमा बन करके आनंद, प्रेम आदि शक्ति के सागर की शक्तियों का अनुभव करा सकते हैं ।

एक अव्यक्त मुरली में बापदादा ने हम बच्चों से पूछा है कि बच्चे अमृतवेले, योग में तुम्हारे भक्त और तुम्हारी प्रजा की दर्द भरी पुकार सुनने में नहीं आती ? क्या उन्हों के ऊपर तरस की भावना के आधार पर उपकार करने की वृत्ति उत्पन्न नहीं होती ? यह पुकार और उपकार योग की अव्यक्त स्थिति में बहुत ही अच्छे रूप में सुनने में आते हैं । सूक्ष्म रूप में, योग के कंपन (vibrations) सूक्ष्म शक्तियों द्वारा, प्यारे बाबा का संदेश, कई आत्माओं तक पहुंच सकते हैं । इस ज्ञान में आने से पहिले हमारे कई भाई-बहनों ने परमात्मा का, ब्रह्मा बाबा का, फरिश्तों आदि का साक्षात्कार किया है । तो जरूर यह साक्षात्कार हमारे उस सूक्ष्म सेवा के साधन का प्रतिबिंब है । हम, फरिश्ता रूप धारण करके, चमकीली ड्रेस पहन करके, इस सृष्टि रूपी नभमंडल में विहार कर सकते हैं । हम सबको अपना अंतवाहक सूक्ष्म शरीर है । हम इस अंतवाहक या सूक्ष्म शरीर को धारण करके चारों ओर घूम सकते हैं । आज का विज्ञान भी टेलीपेथी (Telepathy) को मानता है । कई सन्यासी महात्माएं, टेलीपेथी रूपी सूक्ष्म साधन के द्वारा लेनदेन करते हैं । तो जरूर टेलीपेथी रूपी साधन को, सूक्ष्म सेवा का साधन समझ करके कार्यान्वित करें तो हमारा कार्य बहुत ही जल्दी सफल हो सकता है ।

हरेक प्रकार के साधनों में, साधनों के विपरीत प्रयोग से नुकसान होने का भी डर है । चित्र रूपी कला को हमने ईश्वरीय सेवा का साधन बनाया है । चित्रों की प्रदर्शनी द्वारा हम अनेक आत्माओं को ईश्वरीय संदेश देते हैं । अमेरिका से डा. राबर्ट मूलर जब मधुबन में आये थे तब उन्होंने अपने अनुभव में बताया था कि वे माडर्न आर्ट की प्रदर्शनी कभी नहीं देखते क्योंकि उसमें नग्नता का ही विशेष करके प्रदर्शन होता है । पिछली यूनिवर्सल पीस कान्फ्रेंस में लेखक और कलाकार की वर्कशाप में यूरोप से आई हुई एक अभिनेत्री ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए बताया था कि कलाकार के ऊपर नीति-अनीति के बंधन नहीं होने चाहियें, कला इन दोनों से ऊपर है । तब मैंने वर्कशाप के अध्यक्ष रूप में बताया कि कलाकार भी आत्मा है और समाज का अंग है और इसी कारण वह समाज के नैतिक बंधनों को कला के नाम पर तोड़ नहीं सकता । मेरे इस विधान के साथ सारी सभा सहमत थी । तात्पर्य यह कि चित्रकला एक कला है और हमने उसको ज्ञान का संदेश देने का माध्यम बनाया । उसी प्रकार सर्वशक्तिमान परमात्मा की ज्ञान, आनंद, प्रेम, पवित्रता आदि की जो शक्ति है उसी शक्ति को नि:स्वार्थ रूप से अर्थात किसी भी प्रकार से व्यक्तिगत या व्यावसायिक रूप से प्रयोग में न ला करके निमित्त भाव से प्रयोग में लाये तो ईश्वरीय सेवा में जैसे कि सोने में सुहागा मिल जायेगा ।

अब तक हम सर्व शक्तिमान की शक्तियों का स्थूल शब्दों द्वारा परिचय देते हैं । अब इसी साधन की साधना में थोड़ा परिवर्तन करके इन्हीं शक्तियों का सूक्ष्म रूप में परिचय करायें । जैसे अखबार में समाचार रूपी संदेश सूक्ष्म रूप में होते हैं, रेडियो पर वही संदेश श्राव्य रूप में और टेलीविज़न पर दृश्य और श्राव्य रूप में होते हैं । उसी प्रकार परमात्मा की इन शक्तियों का अनुभव सूक्ष्म रूपों में श्राव्य, या दृश्य और श्राव्य रूप में हो सकता है । ब्रह्मा बाबा का सागर के तट पर बैठकर विनाश का साक्षात्कार करना और बाद में नई सृष्टि की स्थापना करना और आकाशवाणी द्वारा सूक्ष्म रूप में सुनना कि इस विश्व-परिवर्त्तन के लिये तुम्हें निमित्त बनना है, यह सूक्ष्म अनुभव अनेक स्थूल अनुभवों से ज्यादा परिणामकारक (Effective) हैं । इस दिव्य साक्षात्कार द्वारा ही तो शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा को ईश्वरीय सेवा के लिये प्रेरित किया अर्थात इस सूक्ष्म शक्ति के द्वारा ईश्वरीय सेवा का प्रारंभ हुआ ।

योग का लक्ष्य है विकर्म विनाश करना, साथ २ हम योग की सूक्ष्म शक्ति, ईश्वरीय सेवा अर्थ अपना लें तो इन सूक्ष्म रूप की शक्तियों द्वारा अनेक बातें सहज हो सकती हैं । जैसे टेलीविजन स्टेशन पर व्यक्ति बैठता, समाचार सुनानेवाला समाचार पढ़ता है और जिस के पास टेलीविज़न है वह समाचार सुनता है और देखता है उसी प्रकार ब्रह्मा बाबा भी कई बार साकार मुरली में हम बच्चों को कहते थे कि मैं सम्मुख में बैठे थोड़े बच्चों के लिये नहीं परंतु मेरे सभी बच्चों को सम्मुख में रखकर मुरली चलाता हूं, उसी प्रकार हम आत्मायें भी जब रोज मुरली पढ़ें तो जो भी हमारे सतयुग त्रेता की प्रजा होगी या द्वापरयुग से भक्त बनने वाली होगी अर्थात जिसका भाग्य होगा और ड्रामा में पार्ट होगा वह ज़रूर इस ज्ञान और योग के सूक्ष्म विस्तार को सुन सकेगा या साक्षात्कार करके देख सकेगा अर्थात उस के आगे बापदादा सूक्ष्म रूप में प्रत्यक्ष हो सकते हैं ।

हमारे ईश्वरीय सेवा के कार्य का विस्तार बहुत बड़ा है । हमारे पास

शेष पृष्ठ ३२ पर

पूछ अपने से !

ब्र.कु. राजकुमारी, देहली

पवित्रता परमात्मा का उपहार है -
मिला है तुझे ?
पवित्रता 'पर्सनैलिटी' है -
पाई है तुमने ?
पवित्रता श्रेष्ठता है -
धारण की है क्या ?
पवित्रता सौन्दर्य है -
है तेरे पास ?
पवित्रता महानता है -
आई तुझमें ?
पवित्रता परम शक्ति है -
भरी है स्वयं में ?
पवित्रता स्व धर्म है,
हो रक्षक इसके ?

पवित्रता अलौकिकता है -
किस हद तक लाई है ?
पवित्रता का नाता अविनाशी है -
जोड़ा है तुमने ?
पवित्रता reality है -
को है अनुभव ?
पवित्रता तेरा श्रृंगार है,
सजे हो ?
पवित्रता लाईट का ताज है,
पहना है क्या ?
पवित्रता सुख-शान्ति की जननी है,
पाला पोसा तुझे ?
पवित्रता ईश्वरीय जीवन धारा है -
नहाए हो इसमें ?

पवित्रता Royality है -
लगती है अपनी ?
पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्वास है -
ठीक चल रहा है न ?
पवित्रता तेरा राज भाग है -
पाया है ?
पवित्रता संगमयुग की प्राप्ति है -
की है न तुमने ?
पवित्रता दिव्यता है -
लाई है अपने में ?
तुझे मनसा-वाचा-कर्मणा -
पवित्र हो पवित्र दुनिया में
जाना है ।
Purity is surity.

(तनाव से मुक्ति पृष्ठ १८ का शेष)

सुरेश - समय का अभाव उन्हें लगता है, जो समय को वेस्ट करते हैं । धन के अभाव का कारण भी धन का दुरुपयोग ही है । कोई भी चीज़ जब वेस्ट की जाती है तो उसका अभाव हो जाता है ।

तो सार्वभौमिक रूप से तनाव के कारण - इच्छाएं, चिड़चिड़ापन, क्रोधी स्वभाव, आत्म विश्वास व निर्भयता की कमी - ये सब हैं । तो इसमें हमारा अनुभव तो यह है कि राजयोग से मनुष्य का चित्त सरल होता है, उसका सोचने का तरीका बदलने लगता है, आत्मिक शक्तियाँ बढ़ने से आत्म-विश्वास व निर्भयता आ जाती है, मन शान्त व सन्तुलन में रहने लगता है । इसलिए कोई भी बात आने पर राजयोगी विचलित नहीं होता और आत्म-विश्वास के साथ, भय रहित होकर वह सरलता से उसकी मुक्ति का उपाय ढूंढ लेता है । यदि किसी बात में चिन्ता होने भी लगे तो वह उसे ज्ञान-बल से दूर कर लेता है ।

रमेश - हाँ राजयोग ही वास्तव में यथार्थ समाधान है । और आप राजयोगी हैं अब हम आपके अनुभव सुनना चाहेंगे कि कभी भी तनाव आने पर आप उसे कैसे दूर करते हैं ।

सुरेश - मैं सदैव सोचता हूँ कि ये मनुष्य जीवन सुख के दिन व्यतीत करने के लिए है न कि जलने, भुनने के लिए । समस्याएं तो रहेगी ही, परन्तु यदि हम बुद्धिवान व्यक्ति भी चिन्ताओं में घुलते रहेंगे तो हमसे तो वे पशु-पक्षी अच्छे हैं जिन्हें मनुष्य बुद्धि हीन समझता है, परन्तु वे सदा प्रसन्न व तनावमुक्त रहते हैं ।

जब थोड़ा भी तनाव मन में आता है तो हम ज्ञान अध्ययन कर लेते हैं, उस अध्ययन से विचार धाराएँ बदल जाती हैं । मन को नई दिशा मिल जाती है और वास्तव में तो समस्या का समाधान ही मिल जाता है । तो ये ईश्वरीय महावाक्य हमारे सच्चे मित्र हैं जो हमें आवश्यकता में सही राह दिखाते हैं ।

थोड़ा भी तनाव होने पर हम स्थान परिवर्तन कर लेते हैं । उससे विचार तुरन्त फ्रेश हो जाते हैं । क्योंकि उसी स्थान पर रहने से वहाँ के वाइब्रेशन तनाव को बढ़ाने ही रहेंगें ।

रमेश - ये तो बड़ी सुन्दर व अपनाने जैसी बातें हैं । लगता है अब तो मुझे भी पक्का राजयोगी बनना ही पड़ेगा ।

सुरेश - यह तो खुशी की बात है । मुझे याद आया, मैंने पिछले ही दिनों एक प्रयोग किया, जिससे मन शान्त करने में बहुत मदद मिली ।

रमेश - बताओ तो मैं भी कुछ सीखूं . . .

सुरेश - जब भी कोई छोटी-मोटी बात मन के द्वारे पर आती थी तो मैं सोचता था कि मानो कि सामने भगवान स्वयं खड़े हैं और कह रहे हैं -

"बच्चे तुम चिन्ता क्यों करते हो, मैं तुम्हारे साथ हूँ" मानो मेरे कानों में आवाज गूंज रही हो ।

"मेरे मीठे बच्चे, मैं तुम्हें बेगम पुर का बादशाह बनाने आया हूँ । तुम्हें तो सबकी चिन्ता हरनी है, तुम चिन्तित क्यों हो ।"

"बच्चे, मैं तुम्हारे लिए स्वर्ग साथ में लाया हूं । ये दुख के थोड़े से दिन बाकी हैं . . . तुम्हारे सुख के दिन आ रहे हैं । तुम शोकमत करो"

"प्यारे बच्चे, तुम उदास व चिन्तित क्यों हो, मैं तेरा परममित्र, तेरा मन बहलाने के लिए आ गया हूं । बच्चे, यह तो खेल है तुम इस खेल को खेल की तरह ही खेलो ।"

और इस प्रकार वहाँ सन्नाटा छा गया और दोनों वहीं शान्ति में बैठ गये और गीत बजा

पाकर तुमको बाबा, सुख का सार पा लिया
पाने का ना कुछ रहा, जब तुमको पा लिया

आध्यात्मिक सेवा समाचार

रक्षा बंधन तथा जन्माष्टमी पर ईश्वरीय सेवायें

प्रजापिता ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के प्रत्येक सेवा केन्द्र ने हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी "पवित्रता का प्रतीक पावन राखी पर्व" बहुत ही धूम-धाम से मनाया गया । देश विदेश से सेवा-केन्द्रों से इतने समाचार प्राप्त हुए हैं यदि उन सब को पत्रिका में डाला जाये तो पूरे वर्ष के अंक भी अपर्याप्त होंगे । इस शुभ अवसर पर विश्व के सभी सेवा-केन्द्रों ने अपने अपने शहर के गणमान्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों को पवित्रता की सूचक राखी बाँधी ।

दिल्ली में भारत के प्रथम नागरिक राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी को पावन राखी बाँधते हुए आत्म-स्मृति का टीका दिया गया । भारत के कुछ केन्द्रीय मन्त्रियों, लोक सभा सदस्यों, नगर निगम के सदस्यों तथा अन्य महानुभावों को राखी बाँधते हुए ईश्वरीय सन्देश दिया गया । भारत के उच्चतम न्यायलय के कुछ न्यायाधीशों को इस अवसर पर ईश्वरीय सन्देश दिया गया तथा धार्मिक नेताओं को राखी के रहस्य पर प्रकाश डाला गया ।

भारत के प्रान्तों की राजधानियों से भी समाचार आया है कि वहाँ के राज्यपालों, मुख्यमन्त्रियों, मन्त्रियों, उच्च न्यायालयों के न्यायधीशों आदि को राखी बाँधते हुए सात्विक और पवित्र जीवन बनाने का सन्देश दिया गया । अनेक सेवा केन्द्रों से समाचार मिला है कि वहाँ के आयुक्त, उपायुक्त, जिलाधीश, सी.एम.ओ. आदि-आदि को रक्षा बंधन पर दिव्य सन्देश दिया गया । साथ साथ शहर के कारागारों में जाकर सभी कैदियों को, अनाथालय एवं अन्ध विद्यालय के बच्चों को, अपंगों तथा अन्य कई वर्ग की आत्माओं को राखी का शुभ सन्देश सुनाते स्नेहसूचक राखी बांधी गई तथा खर्ची के रुप में पांच बुराईयों को छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई गई । इस अवसर पर ब्रहमाकुमारी बहनें राखी का रहस्य समझाते हुए जब अपने रुहानी भाईयों को राखी बांधती तो वे अपनी स्वइच्छा से कोई न कोई बुराई दान रूप में अवश्य दे देते । इस प्रकार किसी ने क्रोध का दान दिया, किसी ने शराब, सिग्रेट तथा अन्य नशीली वस्तुओं को त्यागने का व्रत लिया । किसी ने ब्रहमचर्य में रहने की प्रतिज्ञा की और दिव्य गुणों को जीवन में लाने का सकंल्प किया ।

इसके अतिरिक्त जन्माष्टमी पर भी सर्व केन्द्रों पर सुन्दर झाँकिया सजाई गयी । सतयुग के महाराज कुमार श्री कृष्ण का साक्षात्कार करने सेवा केन्द्रों पर भक्तों की भीड़ स्वत: उमड़ पड़ी । कहीं-कहीं आध्यात्मिक प्रदर्शनियां लगाई गयीं । जिससे लाखों आत्माओं को शिव बाबा का सन्देश मिला ।

(सूक्ष्म ईश्वरीय सेवाएं और राजयोग विद्यापीठ पृष्ठ ३० का शेष)

अभी तक डेढ़ लाख (1½ लाख) जितनी आत्मायें तैयार हैं । हमें सतयुग के प्रारंभ की ५,९६,९०८, त्रेता के अंत तक की ३३ कोटि देवताएं और द्वापर के प्रारंभ से हमारे होने वाले अनेकानेक भक्तों का निर्माण करना है । कार्य बहुत बड़ा है और इतने बड़े कार्य के लिये अब सूक्ष्म सेवाओं के विस्तार के आधार पर हमें कार्य जल्दी करना है और इसीलिये मौन का अभ्यास जरूरी है । मौन में रहने से हम अपने स्थूल एवम् सूक्ष्म शक्तियों का संचय कर सकते हैं । शक्तिसंचय और इंद्रिय निग्रह के द्वारा हमारी साधना में तीव्रता तथा तेजस्विता आयेगी और हमारी प्रतिभा स्थूल और सूक्ष्म रूप में तेजस्वी बनेगी । यही तेजस्विता हमें साक्षात्कार मूर्त बनने में मददगार बनेगी । हम संपूर्णता के नजदीक भी जायेंगे और साथ २ यही संपूर्णता सूक्ष्म रूप में सेवा में मददगार बनेगी । जितना २ हम संपूर्णता के नजदीक जाते जायेंगे उतना २ हमारा अव्यक्त रूप अर्थात सूक्ष्म रूप तेजस्वी बनता जावेगा और उसी तेजस्वी रूप के आधार पर हमारे ईश्वरीय ज्ञान की दिव्यता, भव्यता और सार्थकता सिद्ध होगी । उस समय सेवा करनी नहीं पड़ेगी लेकिन सेवा अपने आप होती रहेगी । इसलिए ईश्वरीय सेवा में सूक्ष्म साधनों के साधना के साथ २ हमारी संपूर्णता की साधना उतनी ही जरूरी है । हमारी संपूर्णता ही हमें वरदानी मूर्त स्वयं (Automatic) बनायेगी । सूक्ष्म सेवाओं की दिव्यता और सार्थकता को समझ करके हम अपने आपको जितना हो सके सूक्ष्म अर्थात संपूर्ण बनायेंगे उतनी ही हमारी सूक्ष्म सेवा में तीव्रता आएगी । सेवा के अंतिम चरण में यही सूक्ष्म सेवायें, इस धरती पर सतयुग लाने में मददगार बनेंगी अर्थात् सतयुग और सूक्ष्म सेवा का इस प्रकार पारस्परिक सम्बन्ध है । हमारे टीचर्स बहन-भाई विशेष इस सूक्ष्म सेवाओं और साधना के प्रति ध्यान दें यही शुभ भावना है । इस कार्य के लिये अब एक 'राजयोग विद्यापीठ' के स्थापना की नितांत आवश्यकता है जहां पर राजयोग के क्षेत्र में विविध प्रकार के प्रयोग हो सकें और उसी शिक्षा द्वारा सबको सूक्ष्म सेवायें करने की ट्रेनिंग मिले । अभी तक टीचर्स ट्रेनिंग की भट्टी अनेक बार हुई और अनेक बहन-भाई इसके लिये प्रयत्न करते हैं, अब जरूरत है कि ऐसी राजयोग विद्यापीठ रूपी ट्रेनिंग सेंटर बने जो ऐसी सूक्ष्म सेवाओं के उगम स्थान का केंद्र बने । जहां ऐसे सूक्ष्म सेवा के अनेक प्रयोग हों और ये प्रयोग सबको सीखने को मिलें । योग के प्रयोग सीखने सिखानेवाली ये राजयोग विद्यापीठ द्वारा बहुविध कार्य हो सकते हैं ।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी 9/19 कृष्णनगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा दिल्ली-32 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70